1. किताबुल वह्य

किताब वह्य के बारे में

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

शैख़ इमाम हाफ़िज़ अबू अब्दुल्लाह मुहम्मद बिन इस्माईल बिन इब्राहीम बिन मुग़ीरा बुख़ारी (रह.) ने फ़र्माया,

قَالَ الشَّيْخُ الإِمَامُ الْحَافِظُ أَبُو عَبْدِ اللهِ مُحَمَّدُ بْنُ إِسْمَعِيلَ بْنِ إِبْرَاهِيمَ بْنِ الْمُغِيرَةِ الْبُخَارِيُّ رَحِمَهُ اللهُ تَعَالَى آمِين:

बाब 1 : इस बारे में कि अल्लाह के रसूल (ﷺ) पर वह्य की इब्तिदा कैसे हुई और अल्लाह अ़ज़्ज़ व जल्ल का ये फ़र्मान कि मैंने बिला शुब्हा (ऐ मुहम्मद !) आपकी तरफ़ वह्य का नुज़ूल उसी तरह किया है जिस तरह हज़रत नूह (अ़लैहिस्सलाम) और उनके बाद आने वाले तमाम नबियों की तरफ़ किया था

١- بَابٌ: كَيْفَ كَانَ بَدْءُ الْوَحْيِ إِلَى رَسُوْلِ اللهِ ﷺ

وَقَوْلُ اللهِ جَلَّ ذِكْرُهُ: ﴿ إِنَّا أَوْحَيْنَا إِلَيْكَ كَمَا أَوْحَيْنَا إِلَى نُوحٍ وَالنَّبِيِّينَ مِن بَعْدِهِ ﴾ [النساء : ١٦٣]

(1). हमको हुमैदी ने ये हदीष़ बयान की, उन्होंने कहा कि हमको सुफ़यान ने ये हदीष़ बयान की, वो कहते हैं हमको यह्या बिन सईद अन्सारी ने ये हदीष़ बयान की, उन्होंने कहा मुझे ये हदीष़ मुहम्मद बिन इब्राहीम तैमी से ह़ासिल हुई। उन्होंने इस ह़दीष़ को अलक़मा बिन वक़्क़ास़ लैष़ी से सुना, उनका बयान है कि मैंने मस्जिदे नबवी

١- حَدَّثَنَا الْحُمَيْدِيُّ، قَالَ: حَدَّثَنَا سُفْيَانُ قَالَ: حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ سَعِيدٍ الأَنْصَارِيُّ قَالَ: أَخْبَرَنِي مُحَمَّدُ بْنُ إِبْرَاهِيمَ التَّيْمِيُّ أَنَّهُ سَمِعَ عَلْقَمَةَ بْنَ

وَقَّاصٍ اللَّيْثِيَّ يَقُولُ : سَمِعْتُ عُمَرَ بْنَ الْخَطَّابِ رَضِيَ اللَّهُ عَنْهُ عَلَى الْمِنْبَرِ يَقُولُ: سَمِعْتُ رَسُولَ اللَّهِ ﷺ يَقُولُ: ((إِنَّمَا الأَعْمَالُ بِالنِّيَّاتِ، وَإِنَّمَا لِكُلِّ امْرِئٍ مَا نَوَى، فَمَنْ كَانَتْ هِجْرَتُهُ إِلَى دُنْيَا يُصِيبُهَا، أَوْ إِلَى امْرَأَةٍ يَنْكِحُهَا، فَهِجْرَتُهُ إِلَى مَا هَاجَرَ إِلَيْهِ)).

[أطرافه في: ٥٤، ٢٥٢٩، ٣٨٩٨، ٥٠٧٠، ٦٦٨٩، ٦٩٥٣].

में मिम्बरे-रसूल (ﷺ) पर हज़रत उमर बिन ख़त्ताब (रज़ि.) की ज़ुबान से सुना, वो फ़र्मा रहे थे कि मैंने जनाब रसूलुल्लाह (ﷺ) से सुना। आप (ﷺ) फ़र्मा रहे थे कि तमाम आ'माल का दारोमदार निय्यत पर है और हर अमल का नतीजा हर इन्सान को निय्यत के मुताबिक़ ही मिलेगा। पस जिसकी हिजरत (तर्के-वतन) दौलते दुनिया हासिल करने के लिये हो या किसी औरत से शादी की ग़रज़ से हो। पस उसकी हिजरत उन्हीं चीज़ों के लिये होगी जिनको हासिल करने की निय्यत से उसने हिजरत की।

(दीगर मक़ामात : 54, 2529, 3898, 5070, 6689, 6953)

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी जामेअ के इफ़्तिताह के लिये या तो सिर्फ़ बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम को ही काफ़ी समझा कि इसमें भी अल्लाह की हम्द कामिल तौर पर मौजूद है या आपने हम्द का तलफ़्फ़ुज़ ज़बान से अदा फ़र्मा लिया कि इसके लिये लिखना ही ज़रूरी नहीं। या फिर आपने जनाबे नबी करीम (ﷺ) की सुन्नत का लिहाज रखा हो नबी करीम (ﷺ) की तहरीरों की शुरूआत सिर्फ़ **बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम** से ही हुआ करती थी जैसा कि तारीख़ और सीरत की किताबों से ज़ाहिर है। हज़रतुल इमामे-क़ुद्दस सिर्रुहु ने पहले **वह्य** का ज़िक्र मुनासिब समझा, इसलिये कि क़ुर्आन व सुन्नत की सबसे पहली बुनियाद **वह्य** है। इसी पर आँहज़रत (ﷺ) की सदाक़त मौक़ूफ़ है। **वह्य** की तारीफ़ अल्लामा क़स्तलानी शारेह बुख़ारी के लफ़्ज़ों में यह है, **वल वह्यु अल इअलामु फ़ी ख़िफ़ाइन व फ़ी इस्तिलाहिश्शरइ इअलामुल्लाहि तआला अम्बियाअहु अश्शैया इम्मा बिकिताबिन औ बि रिसालति मलकिन औ मनामिन औ इल्हामिन** (इर्शादुल सारी 1/48) यानी 'वह्य' **लुग़त** (डिक्शनरी) में उसको कहते हैं कि छुपे हुए तौर पर कोई चीज़ जानकारी में आ जाए और शरअन् 'वह्य' ये है कि अल्लाह पाक अपने नबियों और रसूलों को बराहे रास्त किसी छुपी हुई चीज़ से आगाह फ़र्मा दे। इसकी भी कई सूरतें हैं। या तो कोई किताब नाज़िल फ़र्माए या किसी फ़रिश्ते को भेजकर उसके ज़रिये से ख़बर दे या ख़्वाब में आगाह फ़र्मा दे या फिर दिल में डाल दे। वह्य मुहम्मदी की सदाक़त के लिये हज़रत इमाम ने आयते करीमा **इन्ना औहैना इलयक कमा औहैना इला नूहिन** (अन निसा : 123) दर्ज फ़र्माकर बहुत ही लतीफ़ इशारात फ़र्माए हैं, जिनकी तफ़्सील बहुत **तवील** (विस्तृत) है। मुख़्तसरन ये कि आँहज़रत (ﷺ) पर नाज़िल होने वाली वह्य कोई नई चीज़ नहीं है बल्कि यह सिलसिल-ए-आलिया हज़रत आदम, नूह, इब्राहीम, मूसा, ईसा व दीगर अंबिया व रुसूल (अलैहिस्सलाम) से मरबूत है और इस सिलसिले की आखरी कड़ी हज़रत सय्यिदिना मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) है। इस तरह आप (ﷺ) की तस्दीक़ तमाम अंबिया और रसूलों की तस्दीक़ है और आप (ﷺ) का इन्कार तमाम अंबिया और रसूलों का इन्कार है। अल्लामा इब्ने हजर (रह.) फ़र्माते हैं, **मुनासबतुल आयति लित् तर्जुमति वाज़िहुन मिन जहति अन्न सिफ़तल वह्य इला नबिय्यिना (ﷺ) तुवाफ़िक़ु सिफ़तल वह्यि इला मन तक़द्दमहू मिनन नबिय्यीन** (फ़त्हुल बारी 9/1) यानी बाब बदइल वह्य के इन्एक़ाद और आयत **इन्ना औहैना इलैक** अल आयत में मुनासबत इस तौर पर वाज़ेह (स्पष्ट) है कि नबी करीम (ﷺ) पर वह्य का नुज़ूल क़तई तौर पर उसी तरह है जिस तरह आप (ﷺ) से पहले तमाम नबियों और रसूलों पर वह्य नाज़िल होती रही है।

ज़िक्रे वह्य के बाद हज़रतुल इमाम ने हदीस **'इन्नमल आ'मालु बिन् निय्यात'** को नक़ल फ़र्माया, इसकी बहुत सी वजहें हैं। इनमें से एक वजह यह ज़ाहिर करना भी है आँहज़रत (ﷺ) को ख़ज़ान-ए-वह्य से जो कुछ भी दौलत नसीब हुई है ये सब आप (ﷺ) की पाक निय्यत का फल है जो आप (ﷺ) को शुरूआती उम्र से ही हासिल थी। आपका बचपन, जवानी, यहाँ तक कि नुबूव्वत मिलने से पहले का पूरा अर्सा निहायत पाकीज़गी के साथ गुज़रा। आख़िर में आपने दुनिया से क़तई **अलैहदगी** (एकान्तवास) इख़्तियार फ़र्माकर ग़ारे-हिरा में ख़लवत इख़्तियार फ़र्माई। आख़िर आप (ﷺ) की पाक निय्यत का फल आप (ﷺ) को हासिल हुआ और ख़लअते-रिसालत से आप (ﷺ) को नवाज़ा गया। रिवायत की गई हदीस के सिलसिल-

ए-आलिया में हज़रतुल इमाम क़द्स सिर्रुहु ने इमाम हुमैदी (रह.) से अपनी सनद का इफ़्तिताह फ़र्माया। हज़रत इमाम हुमैदी (रह.) इल्मो-फ़न, हसबो-नसब हर लिहाज़ से इसके **अहल** (योग्य) थे, इसलिये कि उनकी इल्मी और अमली जलालते-शान के लिये यही काफ़ी है कि वो हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) के उस्तादों में से हैं, हसब व नसब के लिहाज से क़ुरैशी हैं। उनका सिलसिल-ए-नसब **नबी करीम** (ﷺ) व हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) से जा मिलता है। उनकी कुन्नियत अबू बक्र, नाम अ़ब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर बिन ईसा है। उनके **अज्दाद** (पूर्वजों) में कोई बुज़ुर्ग हुमैद बिन उसामा नामी गुज़रे हैं, उनकी निस्बत से ये हुमैदी मशहूर हुए। इस हदीष़ को इमाम बुख़ारी (रह.) हुमैदी से जो कि मक्की हैं, लाकर यह इशारा फ़र्मा रहे हैं कि वह्य की इब्तिदा मक्का से हुई थी।

हदीष़ **इन्नमल आ'माल बिन् निय्यात** की बाबत अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, **वहाजल हदीस अहदुल अहादीसिल्लति अलैहा मदारुल इस्लाम ..... वक़ालश्शाफ़ेई व अहमद अन्नहू यदख़ुलू फ़ीहि षुलषुल इल्म** (इर्शादि रिसालत 1/56-57) यानी ये हदीष़ उन अहादीष़ में से एक है जिन पर इस्लाम का दारोमदार है। इमाम शाफ़िई (रह.) और इमाम अह़मद (रह.) जैसे अकाबिरे-उम्मत ने सिर्फ़ इस एक हदीष़ को इल्म व दीन का तिहाई या आधा हिस्सा क़रार दिया है। इसे ह़ज़रत उ़मर (रज़ि.) के अ़लावा तक़रीबन बीस सहाब-ए-किराम (रज़ि.) ने आँह़ज़रत (ﷺ) से नक़्ल फ़र्माया है। बाज़ उलमा ने इसे हदीषे-मुतवातिर भी क़रार दिया है। इसके रावियों में सअ़द बिन अबी वक़्क़ास, अ़ली बिन अबी तालिब, अबू सईद ख़ुदरी, अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द, अनस, अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास, अबू हुरैरह, जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह, मुआ़विया बिन अबी सुफ़यान,, उबादा बिन स़ामित, उतबा बिन अ़ब्दुस्सलमा, हिलाल बिन सुवैद, उ़क़्बा बिन आ़मिर, अबू ज़र उ़क़्बा बिन अल मुन्ज़िर, उ़क़्बा बिन मुस्लिम और अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़ि.) जैसे जलीलुल क़द्र सहाब-ए-किराम के नाम नक़्ल किये गये हैं। (क़स्तलानी)

इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी जामेअ़ स़ह़ीह़ को इस ह़दीष़ से इसलिये शुरू फ़र्माया कि हर नेक काम की तकमील के लिये ख़ुलूसे-निय्यत ज़रूरी है। अहादीसे-नबवी (ﷺ) का जमा करना, उनका लिखना, उनका पढ़ना, ये भी एक नेकतरीन अ़मल है। पस इस फ़न्ने–शरीफ़ के हासिल करने वालों के लिये आदाबे-शरइय्या में से यह ज़रूरी है कि इस इल्म शरीफ़ को ख़ालिस़ दिल के साथ महज़ रज़ा-ए- इलाही व मा'लूमाते सुनन व रिसालत-पनाही के लिये हास़िल करें। कोई फ़ासिद ग़रज हर्गिज़ बीच में नहीं होनी चाहिये। वर्ना ये नेक अ़मल भी अज्रो-षवाब के लिहाज से उनके लिये फ़ायदेमन्द अ़मल षाबित नहीं होगा। जैसा कि इस हदीष़ के शाने-रूद से ज़ाहिर है कि एक शख़्स़ ने उम्मे क़ैस नामी औरत को निकाह का पैग़ाम दिया था, उसने जवाब में यह ख़बर दी कि आप हिजरत करके मदीना आ जाएं तो शादी हो सकती है। चुनाञ्चे वो शख़्स़ इसी ग़रज़ से हिजरत करके मदीना पहुँचा और उसकी शादी हो गई। दूसरे सहाबा उसे **मुहाजिरे उम्मे क़ैस** कहा करते थे। इस हदीष़ के पसमंज़र (बैकग्राउण्ड) में हम अपनी तुलना करें।

ह़ज़रत इमाम क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, **व अख़रजहुल मुअल्लिफ़ु फ़िल ईमानि वल अ़ित्क़े वल हिजरति वन् निकाहि वल ईमानि वन्नुज़ूरि वतरकिल हीयलि व मुस्लिम वतिर्मिज़ी व निसाई व इब्ने माजा व अह़मद व दारूक़ुत्नी व इब्ने हिब्बान वल बैहक़ी** यानी इमाम बुख़ारी (रह.) अपनी जामेअ़ स़ह़ीह़ में इस हदीष़ को यहाँ (यानी किताबुल वह्य) के अ़लावा किताबुल ईमान में भी लाए हैं और वहाँ आप ने ये बाब मुन्अक़िद फ़र्माया है, **बाबु माजाअ अन् नल आ'माल बिन निय्यति वल हिसबति व वलिकुल्ली इमरिइन मानवा** यहाँ आपने इस हदीष़ से इस्दलाल फ़र्माया है कि वुज़ू, ज़कात, हज्ज, रोज़ा समेत सभी आ'माल का अज्र उसी सूरत में हासिल होगा कि ख़ुलूसे-निय्यत से और षवाब की ग़रज़ से उनको किया जाए। यहाँ आपने **इस्तिश्हादे-मजीद** (विस्तृत साक्ष्य/गवाही) के तौर पर क़ुर्आन की आयते करीमा **क़ुल कुल्लुय्यअ़मलू अला शाकिलतिही** को नक़्ल करते हुए बतलाया है कि शाकिलतिही से निय्यत ही मुराद है। मिष़ाल के तौर पर अगर कोई शख़्स़ अपने अह्लो-अयाल पर षवाब की निय्यत से ख़र्च करता है तो यक़ीनन उसे षवाब हासिल होगा। तीसरे इमाम बुख़ारी इस हदीष़ को किताबुल इ़न्क़ में लाए हैं। चौथे बाबुल हिजरत में, पाँचवे किताबुन् निकाह में, छठे नुज़ूर के बयान में, सातवें किताबुल हियल में। हर जगह इस हदीष़ को इस ग़रज़ से नक़्ल किया गया है कि सिहते-आ़'माल और षवाबे-आ'माल सब निय्यत ही पर आधारित हैं और इस हदीष़ का **मफ़हूम** (भावार्थ) आ़म तौर पर दोनों सूरतों में शामिल है। इस हदीष़ के ज़ैल में **फ़ुक़हा-ए-शवाफ़िअ़** (शाफ़िई धर्मशास्त्री) सिर्फ़ सिहते आ'माल की तख़्सीस़ करते (विशिष्ठता बताते)

हैं और **फ़ुक़्ह-ए-अहनाफ़** (हनफ़ी धर्मशास्त्री) सिर्फ़ ष़वाबे-आ'माल की। हज़रत मौलाना अनवर शाह कश्मीरी स़ाहब (रह.) ने इन दोनों की ग़लती बयान फ़र्माते हुए इमामुल मुहद्दिष़ीन बुख़ारी (रह.) के मौक़िफ़ (दृष्टिकोण) की ताईद की है कि ये हदीष़ दोनों सूरतों को शामिल है। (देखें अनवारुल बारी 1/16-17)

निय्यत से मुराद दिल का इरादा है। जो हर फ़ेअल इख़्तियार करने से पहले दिल में पैदा होता है। नमाज़, रोज़ा वग़ैरह के लिये ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा करना ग़लत है। अल्लामा इब्ने तैमिया (रह.) और दीगर अकाबिरे-उम्मत ने तस्रीह की है कि ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा करने का षुबूत न तो ख़ुद रसूले करीम (ﷺ) से है, न सहाबा व ताबेईन से, लिहाज़ा ज़बान से निय्यत के अल्फ़ाज़ अदा करना महज़ बन्दों की ईजाद है, जिसकी शरअन कोई इजाज़त नहीं है।

आजकल एक जमाअत मुन्किरीने-हदीष़ की भी पैदा हो गई है जो अपनी हफ़्वात के सिलसिले में हज़रत उ़मर (रज़ि.) का नाम इस्ते'माल किया करते हैं और कहा करते हैं कि हज़रत उ़मर (रज़ि.) अहादीस रिवायत करने के ख़िलाफ़ थे। इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी जामेअ स़हीह को हज़रत उ़मर (रज़ि.) की रिवायत से शुरू फ़र्माया है, जिससे **रोज़े-रोशन** (दिन के उजाले) की तरह वाज़ेह हो गया है कि मुन्किरीने हदीष़ का हज़रत उ़मर (रज़ि.) पर ये इल्ज़ाम बिल्कुल ग़लत है। हज़रत उ़मर (रज़ि.) ख़ुद अहादीसे-नबवी (ﷺ) को रिवायत फ़र्माया करते थे। हाँ! सिहत के लिये आपकी तरफ़ से एहतियात ज़रूर मद्देनज़र रहता था जो कि हर आ़लिम, इमाम, मुहद्दिष़ के सामने होना ही चाहिये। मुन्किरीने हदीस को मा'लूम होना चाहिये कि सय्यिदिना हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने अपने अहदे-ख़िलाफ़त में अहादीष़े-नबवी (ﷺ) की नश्रो-इशाअ़त का **ग़ैर-मामूली** (असाधारण) एहतिमाम फ़र्माया था और इस्लामी दुनिया के कोने-कोने में ऐसे जलीलुलक़द्र सहाबा को इस ग़रज़ (उद्देश्य) के लिये भेजा था, जिनकी पुख़्तगी सीरत और बुलन्दी-ए-किरदार के अ़लावा उनकी जलालते-इल्मी (ज्ञान की श्रेष्ठता) तमाम सहाबा में **मुसल्लम** (सर्वमान्य/क़ाबिले क़ुबूल) थी। जैसा कि हज़रत शाह वलीउल्लाह (रह.) **'इज़ालतुल ख़िफ़ाअ'** में तहरीर फ़र्माते हैं, जिसका तर्जुमा यह है, 'फ़ारूक़े-आज़म (रज़ि.) ने हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मस्ऊ़द (रज़ि.) को एक जमाअ़त के साथ कूफ़ा भेजा और मग़फ़ल बिन यसार, अ़ब्दुल्लाह बिन मुग़फ़्फ़ल, इमरान बिन हुसैन को बसरा में मुक़र्रर फ़र्माया था और उ़बादा बिन स़ामित और अबू दर्दा को शाम (मौजूदा मुल्क सीरिया) भेजा। साथ ही वहाँ के उ़म्माल को लिखा कि इन हज़रात को तर्वीजे-अहादीष़ (हदीसों के प्रचार-प्रसार) के लिये मुक़र्रर किया गया है, लिहाज़ा ये हज़रात जो अहादीस बयान करें उनसे हर्गिज़ **तजावुज़** (हुक्म उदूली/अवज्ञा) न किया जाए। मुआ़विया बिन अबू सुफ़यान (रज़ि.) जो कि उस वक़्त शाम के गवर्नर थे, उनको ख़ुसूसियत के साथ इसकी तवज्जुह दिलाई।'

हज़रत उ़मर (रज़ि.) सन् 7 नबवी में ईमान लाए और आपके मुस्लिम होने पर का'बा शरीफ़ में तमाम मुस्लिमों ने बाजमाअ़त नमाज़ अदा की, ये पहला मौक़ा था कि बातिल के मुक़ाबले पर हक़ सरबुलन्द हुआ। इसी वजह से रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनको **'फ़ारूक़'** का **लक़ब** (उपाधि) अता फ़र्माई। आप बड़े नेक, **आ़दिल** (न्यायप्रिय) और **स़ाइबुर्राय** (ठोस राय वाले) थे। रसूलुल्लाह (ﷺ) आप की तारीफ़ में फ़र्माया करते थे कि अल्लाह तआ़ला ने हज़रत उ़मर की ज़बान और दिल पर हक़ जारी कर दिया है। सन् 13 नबवी में आपने मदीना की तरफ़ हिजरत फ़र्माई। हज़रत अबू बक्र (रज़ि.) के बाद ख़िलाफ़ते-इस्लामिया को सम्भाला और आपके दौर में **फ़ुतूहाते इस्लामी** (इस्लामी विजय) का दौर सैलाब की तरह दूर-दूर तक पहुँच गया। आप ऐसे **मुफ़क्किर** (चिन्तक) और **माहिरे-सियासत** (राजनीति विशेषज्ञ) थे कि आप का दौर इस्लामी हुकूमत का सुनहरा दौर कहा जाता है। मुग़ीरा बिन शोबा के एक पारसी गुलाम फ़िरोज़ ने आपके दरबार में अपने आक़ा की ग़लत शिकायत पेश की थी। चुनाञ्चे हज़रत उ़मर (रज़ि.) ने उस पर तवज्जुह नहीं दी। मगर वो पारसी गुलाम ऐसा असंतुष्ट हुआ कि सुबह की नमाज़ में ख़ञ्जर छुपा कर ले गया और नमाज़ की हालत में आप पर उस ज़ालिम ने हमला कर दिया। उसके तीन दिन बाद 1 मुहर्रम 24 हिजरी में आपने शहादत पाई और नबी-ए-अकरम (ﷺ) और अपने मुख़्लिस रफ़ीक़ (प्रिय दोस्त) अबूबक्र सिद्दीक़ (रज़ि.) के पहलू में क़यामत तक के लिये सो गये। **इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैही राजिऊ़न-अल्लाहुम्मग़्फ़िर लहुम अज्मईन-आमीन!**

बाब 2 : بَابٌ

(2). हमको अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ ने हदीस बयान की, उनको

٢ - حَدَّثَنَا عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوسُفَ قَالَ:

أَخْبَرَنَا مَالِكٌ عَنْ هِشَامِ بْنِ عُرْوَةَ عَنْ أَبِيهِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِينَ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا أَنَّ الْحَارِثَ بْنَ هِشَامٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ سَأَلَ رَسُولَ اللهِ ﷺ، فَقَالَ: يَا رَسُولَ اللهِ كَيْفَ يَأْتِيكَ الْوَحْيُ؟ فَقَالَ رَسُولُ اللهِ ﷺ: ((أَحْيَانًا يَأْتِينِي مِثْلَ صَلْصَلَةِ الْجَرَسِ وَهُوَ أَشَدُّهُ عَلَيَّ فَيُفْصَمُ عَنِّي وَقَدْ وَعَيْتُ عَنْهُ مَا قَالَ، وَأَحْيَانًا يَتَمَثَّلُ لِيَ الْمَلَكُ رَجُلاً فَيُكَلِّمُنِي فَأَعِي مَا يَقُولُ)). قَالَتْ عَائِشَةُ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا: وَلَقَدْ رَأَيْتُهُ يَنْزِلُ عَلَيْهِ الْوَحْيُ فِي الْيَوْمِ الشَّدِيدِ الْبَرْدِ فَيُفْصِمُ عَنْهُ وَإِنَّ جَبِينَهُ لَيَتَفَصَّدُ عَرَقًا.

[أطرافه في : ٣٢١٥].

मालिक ने हिशाम बिन उर्वा की रिवायत से ख़बर दी, उन्होंने अपने वालिद से नक़ल की, उन्होंने उम्मुल मो'मिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) से नक़ल की। आपने फ़र्माया कि हारिष़ बिन हिशाम नामी एक शख़्स ने आँहज़रत (ﷺ) से सवाल किया था कि हुज़ूर आप पर वह्य कैसे नाज़िल होती है? आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि वह्य नाज़िल होते वक़्त कभी-कभी मुझे घंटी की सी आवाज़ महसूस होती है और वह्य की यह कैफ़ियत मुझ पर बहुत शाक़ (नाक़ाबिले बर्दाश्त/असहनीय) गुज़रती है। जब ये कैफ़ियत ख़त्म होती है तो मेरे दिलो-दिमाग़ पर (उस फ़रिश्ते) के ज़रिए नाज़िलशुदा वह्य महफ़ूज़ हो जाती है और किसी वक़्त ऐसा होता है कि फ़रिश्ता बशक्ले इंसान मेरे पास आता है और मुझसे कलाम करता है। बस मैं उसका कहा हुआ याद रख लेता हूँ। हज़रत आइशा (रज़ि.) का बयान है कि मैंने सख़्त कड़ाके की सर्दी में आँहज़रत (ﷺ) को देखा है कि आप (ﷺ) पर वह्य नाज़िल हुई और जब उसका सिलसिला मौक़ूफ़ (मुल्तवी/स्थगित) हुआ तो आप (ﷺ) की पेशानी पसीने से सरोबार थी। (दीगर मक़ामात : 3215)

तश्रीह : अंबिया (अलैहिमिस्सलाम) ख़ुसूसन आख़री नबी हज़रत मुहम्मद (ﷺ) पर वह्य नाज़िल होने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े (विभिन्न प्रकार) रहे हैं। अंबिया (अलैहिमिस्सलाम) के ख़्वाब भी वह्य होते हैं और उनके क़ल्ब (दिल) पर जो इल्हामात वारिद होते हैं, वो भी वह्य हैं। कभी अल्लाह का भेजा हुआ फ़रिश्ता अपनी असली सूरत में उनसे हमकलाम होता है और कभी वो फ़रिश्ता इन्सान की सूरत में हाज़िर होकर अल्लाह का फ़र्मान सुनाता है। कभी बारी तआला व तक़द्दुस बराहे रास्त ख़ुद (सीधे तौर पर) अपने रसूल से ख़िताब फ़र्माता है। नबी करीम (ﷺ) की हयाते तय्यिबा में वक़्तन-फ़वक़्तन वह्य की ये सभी क़िस्में पाई गईं। ऊपर बयान की गई हदीष़ में जिस घण्टी की आवाज़ की मुशाबहत का ज़िक्र आया है, हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) ने उससे मुराद वह्य लेकर आने वाले फ़रिश्ते के पैरों की आवाज़ बतलाई है। बाज़ हज़रात ने इस आवाज़ से सौते-बारी को मुराद लिया है और क़ुर्आनी आयत **'व मा कान लि-बशरिन अंय्युकल्लिमहुल्लाहु इल्ला वह्यन औ मिव्वरा-इ हिजाब ....'** तर्जुमा : 'और किसी आदमी के लिये मुमकिन नहीं है कि अल्लाह उससे बात करे, मगर इल्हाम (के ज़रिये) से या पर्दे के पीछे से या कोई फ़रिश्ता भेज दे, तो वो अल्लाह के हुक्म से जो अल्लाह चाहे इल्क़ा करे। बेशक वो बुलन्द मर्तबा (और) हिक्मत वाला है।' (सूरह शूरा 51) के तहत इसे वरा-ए-हिजाब वाली सूरत से ताबीर किया है। आजकल टेलीफ़ोन की ईजाद में भी हम देखते हैं कि फ़ोन करने वाला पहले नम्बर डायल करता है और जहाँ वो फ़ोन करता है, वहाँ घण्टी की आवाज़ सुनाई देती है। ये तो नहीं कहा जा सकता कि ऊपर बयान की गई हदीष़ में कोई ऐसा ही इस्तिआरा (रूपक/मिष़ाल) है। हाँ! कुछ न कुछ मुशाबिहत (समरूपता) ज़रूर है।, वह्य और इल्हाम भी अल्लाह पाक की तरफ़ से एक ग़ैबी रूहानी फ़ोन ही है जो आलमे-बाला से उसके मक़्बूल बन्दों, अंबिया व रसूलों के मुबारक दिलों पर नाज़िल करता है। नबी करीम (ﷺ) पर वह्य का नुज़ूल इतनी कष़रत से हुआ कि उसकी तश्बीह (उपमा) **'रहमतों की बरसात'** से दी जा सकती है। क़ुर्आन मजीद वो वह्य है जिसे वह्ये-मतलू कहा जाता है, यानी वो वह्य जो ता-क़यामे-दुनिया मुस्लिमों की तिलावत में रहेगी और वह्ये-ग़ैर मतलू आप (ﷺ) की हदीष़े-क़ुदसिया है जिनको क़ुर्आन मजीद में **'अल हिक्मह'** से ताबीर किया गया है। इन दोनों क़िस्मों की वह्य की हिफ़ाज़त अल्लाह पाक ने अपने ज़िम्मे ली हुई है और इस सवा चौदह सौ साल के अर्से में जिस तरह क़ुर्आन करीम की ख़िदमत और हिफ़ाज़त के लिये हाफ़िज़, क़ारी, उलमा, फ़ाज़िल, मुफ़स्सिरीन लोग पैदा होते रहे हैं, इसी तरह अहादीष़े-

नबवी (ﷺ) की हिफ़ाज़त के लिये अल्लाह पाक ने इमाम बुख़ारी व मुस्लिम (रह.) जैसे मुहद्दिषीन की जमाअत को पैदा किया है। जिन्होंने उलूमे नबवी (ﷺ) की वो ख़िदमत की है कि क़यामत तक उम्मत उनके एहसान से बरी नहीं हो सकती। हदीषे नबवी (ﷺ) है कि अगर दीन षुरेय्या पर होगा तो आले फ़ारस से कुछ लोग पैदा होंगे जो वहाँ से भी इसे हासिल कर लेंगे। बिला शक व शुब्हा इससे यही मुहद्दिषीने किराम इमाम बुख़ारी व मुस्लिम वग़ैरह हैं, जिन्होंने अहादीषे-नबवी की तलब में हज़ारों मील पैदल सफ़र किया और बड़ी तकलीफ़ बर्दाश्त करके उनको जमा किया।

लेकिन बड़े अफ़सोस की बात है कि आज के दौर में कुछ लोग खुल्लम खुला अहादीषे नबवी (ﷺ) का इन्कार करते हैं और मुहद्दिसीने किराम पर फब्तियाँ कसते हैं और कुछ लोग ऐसे भी पैदा हुए हैं जो ज़ाहिरी तौर पर उनके एहतिराम का दम भरते हैं और पर्दे के पीछे उनको ग़ैर-षिक़ा, महज़ रिवायत कुनिन्दा, **दिरायत से आरी** (ज़हानत/प्रतिभा/ज्ञान से ख़ाली) **नाक़िसुल फ़हम** (त्रुटिपूर्ण समझवाला) षाबित करने में अपनी ऐड़ी-चोटी का ज़ोर लगाते रहते हैं। मगर अल्लाह पाक ने अपने मक़बूल बन्दों की अज़ीम ख़िदमात को जो दवाम (स्थायित्व) बख़्शा और उनको क़ुबूले आम अता फ़र्माया, वो ऐसी ग़लत कोशिशों से ज़ाइल (नष्ट) नहीं हो सकता। अल ग़रज़ वह्य की चार सूरतें हैं, (1) अल्लाह पाक बराहे रास्त अपने रसूल से ख़िताब फ़र्माए; (2) कोई फ़रिश्ता अल्लाह का पैग़ाम लेकर आए; (3) ये कि दिल में बात डाल दी जाए; (4) सच्चे ख़्वाब दिखाई दें।

इस्तेलाही (पारिभाषिक) तौर पर वह्य का लफ़्ज़ सिर्फ़ पैग़म्बर के लिये बोला जाता है और इल्हाम आम है जो दूसरे नेक बन्दों को भी होता रहता है। क़ुर्आन मजीद में जानवरों के लिये भी लफ़्ज़ '**इल्हाम**' इस्ते'माल हुआ है। जैसा कि '**व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि ....**' (सूरह नह्ल : 68) में मज़्कूर (वर्णित) है। वह्य की मज़ीद तफ़्सील (विस्तृत विवरण) के लिये हज़रत इमाम ने नीचे लिखी हदीष नक़ल फ़र्माई है।

٣- حَدَّثَنَا يَحْيَى بْنُ بُكَيْرٍ قَالَ: حَدَّثَنَا اللَّيْثُ عَنْ عُقَيْلٍ عَنِ ابْنِ شِهَابٍ عَنْ عُرْوَةَ بْنِ الزُّبَيْرِ عَنْ عَائِشَةَ أُمِّ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنَّهَا قَالَتْ: أَوَّلُ مَا بُدِئَ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ مِنَ الْوَحْيِ الرُّؤْيَا الصَّالِحَةُ فِيْ النَّوْمِ، فَكَانَ لاَ يَرَى رُؤْيَا إِلاَّ جَاءَتْ مِثْلَ فَلَقِ الصُّبْحِ. ثُمَّ حُبِّبَ إِلَيْهِ الْخَلاَءُ، وَكَانَ يَخْلُو بِغَارِ حِرَاءٍ فَيَتَحَنَّثُ فِيْهِ - وَهُوَ التَّعَبُّدُ - اللَّيَالِيَ ذَوَاتِ الْعَدَدِ، قَبْلَ أَنْ يَنْزِعَ إِلَى أَهْلِهِ وَيَتَزَوَّدُ لِذَلِكَ، ثُمَّ يَرْجِعُ إِلَى خَدِيْجَةَ فَيَتَزَوَّدُ لِمِثْلِهَا، حَتَّى جَاءَهُ الْحَقُّ وَهُوَ فِي غَارِ حِرَاءٍ، فَجَاءَهُ الْمَلَكُ فَقَالَ: اقْرَأْ. فَقَالَ: فَقُلْتُ ((مَا أَنَا بِقَارِئٍ)). قَالَ: ((فَأَخَذَنِيْ فَغَطَّنِيْ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجُهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِيْ)) فَقَالَ: اقْرَأْ: ((قُلْتُ: مَا أَنَا بِقَارِئٍ. فَأَخَذَنِيْ

(3) हमको यह्या बिन बुकैर ने ये हदीष बयान की, वो कहते हैं कि इस हदीष की हमको लैष ने ख़बर दी, लैष अक़ील से रिवायत करते हैं। अक़ील इब्ने शिहाब से, वो उर्वा बिन ज़ुबैर से, वो उम्मुल मो'मिनीन हज़रत आइशा (रज़ि.) से नक़ल करते हैं कि उन्होंने बतलाया कि आँहज़रत (ﷺ) पर वह्य का शुरूआती दौर अच्छे-सच्चे पाकीज़ा ख़्वाबों से शुरू हुआ। आप ख़्वाब में जो कुछ देखते वो सुबह की रोशनी की तरह सही और सच्चा षाबित होता। फिर मिनजानिबे क़ुदरत आप (ﷺ) तन्हाईपसंद (एकान्त प्रिय) हो गए और आप (ﷺ) ने ग़ारे हिरा में ख़ल्वतनशीनी इख़्तियार फ़र्माई और कई-कई दिन और रात वहाँ मुसलसल इबादत और यादे इलाही व ज़िक्रो-फ़िक्र में मशग़ूल रहते। जब तक घर आने को दिल न चाहता तौशा (खाना) साथ लिए वहाँ रहते। तौशा ख़त्म होने पर ही अहलिया मुहतरमा हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) के पास आते और कुछ तौशा साथ लेकर फिर वहाँ जाकर ख़ल्वत गुज़ीं हो जाते, यही तरीक़ा ज़ारी रहा यहाँ तक कि जब आप (ﷺ) पर हक़ ज़ाहिर हो गया और आप (ﷺ) गारे हिरा ही में क़याम-पज़ीर (ठहरे हुए) थे कि अचानकएक रात हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) आपके पास हाज़िर हुए और कहने लगे कि ऐ मुहम्मद (ﷺ)! पढ़ो आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि मैंने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ, आप (ﷺ) फ़र्माते हैं कि फ़रिश्ते ने मुझे

فَغَطَّنِي الثَّانِيَةَ حَتَّى بَلَغَ مِنِّي الْجُهْدَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي)) فَقَالَ: اقْرَأْ: ((فَقُلْتُ: مَا أَنَا بِقَارِىءٍ. فَأَخَذَنِي فَغَطَّنِي الثَّالِثَةَ، ثُمَّ أَرْسَلَنِي فَقَالَ: ﴿اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ، خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ. اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ ﴾)) فَرَجَعَ بِهَا رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ، يَرْجُفُ فُؤَادُهُ، فَدَخَلَ عَلَى خَدِيجَةَ بِنْتِ خُوَيْلِدٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهَا فَقَالَ: ((زَمِّلُونِي زَمِّلُونِي)) فَزَمَّلُوهُ حَتَّى ذَهَبَ عَنْهُ الرَّوْعُ، فَقَالَ لِخَدِيجَةَ وَأَخْبَرَهَا الْخَبَرَ. ((لَقَدْ خَشِيتُ عَلَى نَفْسِي)). فَقَالَتْ خَدِيجَةُ : كَلاَّ وَاللهِ مَا يُخْزِيكَ اللهُ أَبَدًا، إِنَّكَ لَتَصِلُ الرَّحِمَ، وَتَحْمِلُ الْكَلَّ، وَتَكْسِبُ الْمَعْدُومَ، وَتَقْرِي الضَّيْفَ، وَتُعِينُ عَلَى نَوَائِبِ الْحَقِّ. فَانْطَلَقَتْ بِهِ خَدِيجَةُ حَتَّى أَتَتْ بِهِ وَرَقَةَ بْنَ نَوْفَلِ بْنِ أَسَدِ بْنِ عَبْدِ الْعُزَّى - ابْنَ عَمِّ خَدِيجَةَ- وَكَانَ امْرَأً تَنَصَّرَ فِي الْجَاهِلِيَّةِ، وَكَانَ يَكْتُبُ الْكِتَابَ الْعِبْرَانِيَّ، فَيَكْتُبُ مِنَ الإِنْجِيلِ بِالْعِبْرَانِيَّةِ مَا شَاءَ اللهُ أَنْ يَكْتُبَ، وَكَانَ شَيْخًا كَبِيرًا قَدْ عَمِيَ، فَقَالَتْ لَهُ خَدِيجَةُ : يَا ابْنَ عَمِّ اسْمَعْ مِنَ ابْنِ أَخِيكَ. فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ : يَا ابْنَ أَخِي مَاذَا تَرَى؟ ((فَأَخْبَرَهُ رَسُولُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ خَبَرَ مَا رَأَى)) فَقَالَ لَهُ وَرَقَةُ: هَذَا النَّامُوسُ الَّذِي نَزَّلَ اللهُ

पकड़कर इतने ज़ोर से भींचा कि मेरी ताक़त जवाब दे गई, फिर मुझे छोड़कर कहा कि पढ़ो, मैंने फिर वही जवाब दिया कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। उस फ़रिश्ते ने मुझको निहायत ही ज़ोर से भींचा कि मुझको सख़्त तकलीफ़ महसूस हुई, फिर उसने कहा कि पढ़! मैंने कहा कि मैं पढ़ा हुआ नहीं हूँ। फ़रिश्ते ने मुझको पकड़ा और तीसरी बार फिर मुझको भींचा और कहने लगा कि पढ़ो! अपने रब के नाम की मदद से जिसने पैदा किया और इंसान को ख़ून की फुटकी से बनाया, पढ़ो! और आपका रब बहुत ही मेहरबानियाँ करने वाला है। बस यही आयतें आप हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) से सुनकर इस हाल में ग़ारे हिरा से वापस हुए कि आपका दिल इस अनोखे वाक़िये से कांप रहा था। आप हज़रत ख़दीजा के यहाँ तशरीफ़ ले गए और फ़र्माया कि मुझे कंबल ओढ़ा दो, मुझे कंबल ओढ़ा दो। उन्होंने आपको कंबल ओढ़ा दिया। जब आपका डर जाता रहा। तो आपने अपनी जोज़े मुहतरमा हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) को तफ़्सील के साथ यह वाक़िया सुनाया और कहने लगे कि मुझको अब अपनी जान का ख़ौफ़ हो गया है। आपकी बीवी हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने आपको ढारस (हिम्मत) बंधाई और कहा कि आपका ख़याल सहीह नहीं है। अल्लाह की क़सम! आपको अल्लाह कभी रुस्वा नहीं करेगा, आप तो अख़लाक़े-फ़ाज़िला (श्रेष्ठ चरित्र) के मालिक हैं, आप तो कुम्बा परवर हैं, बेकसों का बोझ अपने सर पर रख लेते हैं, मुफलिसों के लिए आप कमाते हैं, मेहमान नवाज़ी में आप बेमिसाल हैं और मुश्किल वक़्त में आप हक़ बात का साथ देते हैं। ऐसे औसाफ़े-हसना (अच्छे गुणों) वाला इंसान यूँ बेवक़्त ज़िल्लत व ख़्वारी की मौत नहीं पा सकता। फिर मज़ीद तसल्ली के लिए हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) आप (ﷺ) को वर्क़ा बिन नौफ़ल के पास ले गईं, जो उनके चचाज़ाद भाई थे और ज़मान-ए-जाहिलिय्यत में ईसाई मज़हब इख़्तियार कर चुके थे और इब्रानी ज़ुबान के कातिब थे, चुनाँचे इञ्जील को भी हस्बे मंश-ए-इलाही इब्रानी ज़ुबान में लिखा करते थे। (इंजील सुरयानी ज़ुबान में नाज़िल हुई थी फिर उसका तर्जुमा इब्रानी ज़ुबान में हुआ, वर्क़ा उसी को लिखते थे) वो बहुत बूढ़े हो गए थे यहाँ तक कि उनकी बीनाई भी जा चुकी थी। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) उनके सामने आपके हालात बयान किए और कहा कि ऐ चचाज़ाद भाई! अपने भतीजे (मुहम्मद ﷺ) की ज़ुबानी ज़रा उनकी कैफ़ियत सुन

लीजिए। वो बोले कि भतीजे आपने जो कुछ देखा है, उसकी तफ़्सील सुनाओ। चुनाँचे आप (ﷺ) ने शुरू से आख़िर तक पूरा वाक़िआ सुनाया, जिसे सुनकर वर्क़ा बेइख़्तियार होकर बोल उठे कि ये तो वही नामूस (मुअ़ज़्ज़ राज़दाँ फ़रिश्ता) है जिसे अल्लाह ने हज़रत मूसा (अ़लैहिस्सलाम) पर वह्य देकर भेजा था, काश! मैं आपके उस अ़हदे नुबुव्वत के शुरू होने पर जवान उ़म्र होता। काश! मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा रहता जबकि आपकी क़ौम आपको इस शहर से निकाल देगी। रसूले करीम (ﷺ) ने यह सुनकर तअ़ज्जुब से पूछा कि क्या वो लोग मुझको निकाल देंगे? (हालाँकि मैं तो उनमें स़ादिक़ व अमीन व मक़बूल हूँ) वर्क़ा बोला हाँ! यह सबकुछ सच है। मगर जो शख़्स भी आपकी तरह अम्रे ह़क़ लेकर आया लोग उसके दुश्मन ही हो गए हैं। अगर मुझे आपकी नुबुव्वत का वो ज़माना मिल जाए तो मैं आपकी पूरी-पूरी मदद करूँगा । मगर कुछ दिनों बाद वर्क़ा बिन नौफ़ल का इंतिक़ाल हो गया। फिर कुछ वक़्त तक आप (ﷺ) पर वह्य का आना मौक़ूफ़ (स्थगित) रहा।

(दीगर मक़ामात: 3392, 4953, 4955, 4956, 4957, 6982)

عَلَى مُوْسَى، يَالَيْتَنِيْ فِيْهَا جَذَعًا، لَيْتَنِي أَكُوْنُ حَيًّا إِذْ يُخْرِجُكَ قَوْمُكَ. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : ((أَوَ مُخْرِجِيَّ هُمْ ؟)) قَالَ: نَعَمْ، لَمْ يَأْتِ رَجُلٌ قَطُّ بِمِثْلِ مَا جِئْتَ بِهِ إِلاَّ عُوْدِيَ، وَإِنْ يُدْرِكْنِي يَوْمُكَ أَنْصُرْكَ نَصْرًا مُؤَزَّرًا. ثُمَّ لَمْ يَنْشَبْ وَرَقَةُ أَنْ تُوُفِّيَ، وَفَتَرَ الْوَحْيُ.

[أطرافه في : ٣٣٩٢، ٤٩٥٣، ٤٩٥٥، ٤٩٥٦، ٤٩٥٧، ٦٩٨٢].

(4) इब्ने शिहाब कहते हैं मुझको अबू सलमा बिन अ़ब्दुर्रहमान ने हज़रत जाबिर (रज़ि.) बिन अ़ब्दुल्लाह अंसारी से ये रिवायत नक़ल की कि आप (ﷺ) ने वह्य के रुक जाने के ज़माने के हालात बयान फ़र्माते हुए कहा कि एक रोज़ मैं चला जा रहा था कि अचानक मैंने आसमान की तरफ़ एक आवाज़ सुनी और मैंने अपना सर आसमान की तरफ़ उठाया क्या देखता हूँ कि वही फ़रिश्ता जो मेरे पास ग़ारे हिरा में आया था वो आसमान व ज़मीन के बीच एक कुर्सी पर बैठा हुआ है। मैं उससे डर गया और घर आने पर मैंने फिर कंबल ओढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। उस वक़्त अल्लाह पाक की तरफ़ से ये आयतें नाज़िल हुईं। ऐ कंबल ओढ़कर लेटने वाले! उठ खड़ा हो और लोगों को अ़ज़ाबे इलाही से डरा और अपने रब की बड़ाई बयान कर और अपने कपड़ों को पाक साफ़ रख और गंदगी से दूर रह। इसके बाद वह्य तेज़ी के साथ पे दर पे आने लगी। इस ह़दीष़ को यह्या बिन बुकैर के अ़लावा लैष़ बिन सअ़द से अ़ब्दुल्लाह बिन यूसुफ़ और अबू स़ालेह ने भी रिवायत किया है। और अ़क़ील के अ़लावा ज़ुहरी से हिलाल बिन रव्वाद ने भी रिवायत किया है। यूनुस और मअ़मर ने अपनी

٤- قَالَ ابْنُ شِهَابٍ: وَأَخْبَرَنِيْ أَبُو سَلَمَةَ بْنُ عَبْدِ الرَّحْمَنِ عَنْ جَابِرِ بْنِ عَبْدِ اللهِ الأَنْصَارِيِّ قَالَ: وَهُوَ يُحَدِّثُ عَنْ فَتْرَةِ الْوَحْيِ - فَقَالَ فِيْ حَدِيْثِهِ: ((بَيْنَا أَنَا أَمْشِي، إِذْ سَمِعْتُ صَوْتًا مِنَ السَّمَاءِ، فَرَفَعْتُ بَصَرِيْ فَإِذَا الْمَلَكُ جَاءَنِيْ بِحِرَاءَ جَالِسٌ عَلَى كُرْسِيٍّ بَيْنَ السَّمَاءِ وَالأَرْضِ، فَرُعِبْتُ مِنْهُ، فَرَجَعْتُ فَقُلْتُ: زَمِّلُوْنِيْ زَمِّلُوْنِيْ: فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿ يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ، قُمْ فَأَنْذِرْ - إِلَى قَوْلِهِ - وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ﴾. فَحَمِيَ الْوَحْيُ وَتَتَابَعَ)). تَابَعَهُ عَبْدُ اللهِ بْنُ يُوْسُفَ وَأَبُو صَالِحٍ، وَتَابَعَهُ هِلاَلُ بْنُ رَدَّادٍ عَنِ

रिवायत में लफ़्ज़ फ़वादह् की जगह 'बवादिरह' नक़ल किया है।

الزُّهْرِيُّ، وَقَالَ يُونُسُ وَمَعْمَرٌ ((بَوَادِرُهُ)).

(दीगर मक़ामात : 3238, 4122, 4123, 4124, 4125, 4126, 4156, 6214)

[أطرافه في : ٣٢٣٨، ٤٩٢٢، ٤٩٢٣، ٤٩٢٤، ٤٩٢٥، ٤٩٢٦، ٤٩٥٤، ٦٢١٤].

तश्रीह : बवादिर, बादिरह की **जमा** (बहुवचन) है, जो कि जिस्म के गर्दन और मोंढों के बीच वाले हिस्से के लिये बोला जाता है। किसी **दहशत-अंगेज़ मंज़र** (आतंकित करने वाले दृश्य) को देखकर कई बार जिस्म का यह हिस्सा भी फड़कने लगता है। मुराद यह है कि इस हैरत अंगेज़ वाक़िये से आप (ﷺ) के कंधे का गोश्त तेज़ी से फड़कने लगा।

वह्य की इब्तिदा से मुता'ल्लिक़ इस हदीष से बहुत सारे उमूर पर रोशनी पड़ती है। पहला **मनामाते-स़ादिक़ा** (सच्चे ख़्वाबों) के ज़रिये आप (ﷺ) का राबिता आलमे-मिषाल से क़ायम कराया गया, साथ ही आप (ﷺ) ने ग़ारे-हिरा में ख़लवत इख़्तियार की। ये ग़ार (गुफा) मक्का मुकर्रमा से क़रीब तीन मील के फ़ासले पर है। आप (ﷺ) ने वहाँ पर **'तहन्नुष'** इख़्तियार फ़र्माया। लफ़्ज़े तहन्नुष ज़मान-ए-जाहिलिय्यत की इस्तिलाह है। उस ज़माने में इबादत का अहम तरीक़ा यही समझा जाता था कि आदमी किसी गोशे में दुनिया व मा फ़ीहा से अलग होकर कुछ रातें यादे-इलाही में बसर करे। चूँकि आप (ﷺ) के पास उस वक़्त तक वह्ये-इलाही नहीं आई थी, इसलिये आपने यह अमल इख़्तियार फ़र्माया और यादे-इलाही, ज़िक्रो-फ़िक्र व मुराक़ब-ए-नफ़्स में वहाँ वक़्त गुज़ारा। हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आप (ﷺ) को तीन मर्तबा अपने सीने से आपके सीने को मिलाकर ज़ोर से इसलिये भींचा कि अल्लाह के हुक्म से आप (ﷺ) का सीना खुल जाए और एक ख़ाकी व माद्दी (मिट्टी से बनी भौतिक) मख़्लूक़ का नूरानी मख़्लूक़ से **फ़ौरी राबिता** (तात्कालिक सम्पर्क) हासिल हो जाए। यही हुआ कि आप (ﷺ) बाद में वह्ये-इलाही **'इक़्रः बिस्मि रब्बिक'** को आसानी से अदा करने लगे। पहली वह्य में ये सिलसिला उलूमे **मआरिफ़ते-हक़** (हक़ की पहचान), **ख़िलक़ते-इन्सानी** (इन्सान की रचना), क़लम की अहमियत, तालीम के आदाब और इल्म व जहालत में फ़र्क़ के जो लतीफ़ इशारे किये गये हैं, उनकी तफ़्सील का ये मौक़ा नहीं, न ही यहाँ गुन्जाइश है। वर्क़ा बिन नौफ़ल दौरे-जाहिलिय्यत में बुतपरस्ती (मूर्तिपूजा) से अलग होकर नसरानी हो गये थे और उनको सुरयानी और इब्रानी इल्म पर महारत थी। आँहज़रत (ﷺ) ने उनकी वफ़ात पर उनको जन्नती लिबास में देखा, इसलिये कि ये शुरू ही में आप (ﷺ) पर ईमान ला चुके थे। हज़रत ख़दीजतुल कुबरा (रज़ि.) ने आप (ﷺ) की हिम्मत अफ़ज़ाई के लिये जो कुछ भी फ़र्माया वो आप (ﷺ) के अख़्लाक़े-फ़ाज़िला (सद्चरित्र) की बेहतरीन तस्वीर है। हज़रत ख़दीजा (रज़ि.) ने उर्फ़े-आम (प्रचलित नज़रिये) के पेशेनज़र फ़र्माया कि आप जैसे इन्सानियत के हमदर्द, अख़्लाक़ वाले लोग हर्गिज़ ज़लीलो-ख़्वार नहीं हुआ करते, बल्कि आपका मुस्तक़बिल तो बेहद शानदार है। वर्क़ा ने हालात सुनकर हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) को लफ़्ज़ **'नामूसे अकबर'** से याद फ़र्माया। अल्लामा क़स्तलानी (रह.) शरहे बुख़ारी में फ़र्माते हैं, **'हुव स़ाहिबुस्सिर्रुल वह्यि वल मुरादु बिही जिब्रईल अलैहिस्सलातु वस्सलामु व अहलुल किताब यसुम्मूनहू अन्ना मूसुल अकबर'** यानी ये वह्य के राज़दाँ हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) हैं जिनको अहले किताब 'नामूसे अकबर' के नाम से मौसूम किया करते थे। हज़रत वर्क़ा ने अपने नसरानी होने के बावजूद यहाँ हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) का नाम लिया इसलिये कि हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) ही साहिबे-शरीअ़त हैं। हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) शरीअ़ते-मूसा के ही मुबल्लिग़ थे। इसके बाद तीन या ढाई साल तक वह्य का सिलसिला बन्द रहा कि अचानक सूरह मुद्दस्सिर का नुज़ूल हुआ। फिर बराबर पै दर पै वह्य आने लगी।

हज़रत जिब्रईल (अलैहिस्सलाम) ने आप (ﷺ) को दबाया। इसके मुता'ल्लिक़ अल्लामा क़स्तलानी (रह.) फ़र्माते हैं, **'व हाज़ल ग़त्तु लि यफ़रुग़ाहू अनिन्नज़्रि इला उमूरिहुनिया व युक़बलु बि कुल्लियति इला मा युलक़ा इलैहि व कररहू लिल मुबालग़ति वसतदल्ल बिही अला अन्नल मुअद्दिब ला यज़रिबु स़बिय्यन अक्षर मिन षलास जरबात व क़ील अल ग़त्तुल ऊला लियतख़ल्ला अनिद्दुनिया वष्षानियतु लियतफ़र्रग़ लिमा यूहा इलैहि वष्षालिषतु लिल मुवानसह'** (इर्शादुल सारी 1/63) यानी ये दबाना इसलिये था कि आपको दुनियावी उमूर की तरफ़ नज़र डालने से फ़ारिग़ करके जो वह्य व रिसालत का भार आप (ﷺ) पर डाला जा रहा है, उसको पूरी तरह क़ुबूल करने के लिये आप (ﷺ) को तैयार कर दिया जाए। इस वाक़िये से दलील पकड़ी गई है कि मुअल्लिम के लिये मुनासिब है कि अगर ज़रूरत के वक़्त तालिबे-इल्म को मारना ही हो ता

तीन दफ़ा से ज़्यादा न मारे। बाज़ लोगों ने इस वाक़िये **'ग़त्तह'** को आँहज़रत (ﷺ) के ख़ासियतों में शुमार किया है, इसलिये कि दीगर अंबिया की इब्तिदा-ए-वह्य के वक़्त ऐसा वाक़िया कहीं मन्क़ूल नहीं हुआ। हज़रत वर्क़ा बिन नौफ़ल ने आप (ﷺ) के हालात सुनकर जो कुछ ख़ुशी का इज़हार किया, उसकी मज़ीद तफ़्सील अल्लामा क़स्तलानी (रह.) यूँ नक़ल फ़र्माते हैं, **'फ़क़ा-ल लहू वरक़तु अबशिर षुम्म अबशिर फ़ अना अश्हदु इन्नका अल्लज़ी बश्शर बिही इब्नु मरयम व इन्नक अला मिष़ले नामूसे मूसा व इन्नका नबिय्युन मुर्सलून'** यानी वर्क़ा ने यह कहा, 'ख़ुश हो जाइये, ख़ुश हो जाइये, मैं यक़ीनन गवाही देता हूँ कि आप वही नबी व रसूल हैं जिनकी बशारत हज़रत इब्ने मरयम (अलैहिस्सलाम) ने दी थी और आप पर वही नामूस नाज़िल हुआ है जो हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) पर नाज़िल हुआ करता था और बेशक आप (ﷺ) अल्लाह के भेजे हुए सच्चे रसूल हैं। हुज़ूर (ﷺ) ने वर्क़ा बिन नौफ़ल को मरने के बाद जन्नती लिबास में देखा था। वो आप (ﷺ) पर ईमान लाया और आपकी तस्दीक़ की, इसलिये जन्नती हुआ। वर्क़ा बिन नौफ़ल के इस वाक़िये से यह मसला ष़ाबित होता है कि अगर कोई शख़्स अल्लाह और उसके रसूल (ﷺ) पर ईमान लाए और उसको दूसरे इस्लामी फ़राइज़ अदा करने का मौक़ा न मिले, उससे पहले ही वो इंतिक़ाल कर जाए, अल्लाह पाक ईमानी बरकत से उसे जन्नत में दाख़िल करेगा।

हज़रत मौलाना ष़नाउल्लाह अमृतसरी (रह.) सूरह मुद्दस्सिर की आयत **'व ष़ियाबक फ़तह्हिर'** की तफ़्सीर में फ़र्माते हैं कि अरब में शोअरा (शाइर हज़रात) ष़ियाब से मुराद दिल लिया करते हैं। इम्र उल क़ैस कहता है, **'व इन कुन्त साअतका मिन्नी ख़लीक़तन फ़ सुल्ली ष़ियाबी मिन ष़ियाबिकि तुनसिली'** इस शे'र में ष़ियाब से मुराद दिल है। यहाँ मुनासिब यही है क्योंकि कपड़ों का पाक रखना सिहते-सलात (नमाज़) के लिये ज़रूरी है मगर दिल का पाक-स़ाफ़ रखना हर हाल में लाज़मी है। हदीष़ शरीफ़ में वारिद है, **'इन्न फ़िल जसदि मुज़्ग़तन इज़ा स़लुहत स़लुहल जसदु कुल्लुहू व इज़ा फ़सदत फ़सदल जसदु कुल्लुहू अला व हियल क़ल्बु'** यानी इन्सान के जिस्म में एक टुकड़ा है जब वो दुरुस्त हो तो सारा जिस्म दुरुस्त हो जाता है और जब वो बिगड़ जाता है तो सारा जिस्म बिगड़ जाता है, सुनो! वो दिल है। (अल्लाहुम्म असलिह क़ल्बी व क़ल्ब कुल्लि नाज़िर) (तफ़्सीर ष़नाई)

अजीब लतीफ़ा : क़ुर्आन मजीद की कौनसी सूरह पहले नाज़िल हुई? इसके बारे में क़दरे-इख़्तिलाफ़ ह मगर सूरह **'इक़रः बिइस्मि रब्बिकल्लज़ी'** पर अक्षर का इत्तेफ़ाक़ है, इसके बाद वह्य नाज़िल होने का ज़माना ढाई-तीन साल रहा और पहली सूरह **'या अय्युहल मुद्दष़्ष़िर'** नाज़िल हुई। मस्लकी तअस्सुब का हाल मुलाहज़ा हो इस मुक़ाम पर एक स़ाहब ने जो कि बुख़ारी शरीफ़ का तर्जुमा शरह के साथ शाए फ़र्मा रहे हैं, इससे सूरह फ़ातिहा की नमाज़ में अदम रुकनियत की दलील पकड़ी है। चुनाञ्चे उनके अल्फ़ाज़ हैं, 'सबसे पहले सूरह इक़रः नाज़िल हुई और सूरह फ़ातिहा का नुज़ूल बाद में हुआ तो जब तक उसका नुज़ूल नहीं हुआ था, उस ज़माने में नमाज़े किस तरह दुरुस्त हुईं? जबकि फ़ातिहा रुक्ने नमाज़ है कि उसके बग़ैर नमाज़ दुरुस्त ही नहीं हो सकती, नमाज़ में सूरह फ़ातिहा की रुकनियत को मानने वाले जवाब दें।' (अनवारुल बारी जिल्द अव्वल पेज नं. 40)

नमाज़ में सूरह फ़ातिहा पढ़ना नमाज़ की सिहत के लिये ज़रूरी है, इस पर यहाँ तफ़्सील से लिखने का मौक़ा नहीं, न ही इस बहष़ का ये मौक़ा है। हाँ! हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर जीलानी (रह.) के लफ़्ज़ों में इतना अर्ज कर देना ज़रूरी है, **'फ़ इन्न क़िरअतहा फ़रीज़तुन व हिय रुक्नुन तबतुलुस्सलातु बि तरकिहा'** (गुनियतुत् तालिबीन : पेज नं. 53) यानी नमाज़ में रुक्न के तौर पर सूरह फ़ातिहा का पढ़ना फ़र्ज़ है, जिसके छोड़ने से नमाज़ बातिल हो जाती है। मौसूफ़ के जवाब में हम लगे हाथों इतना अर्ज़ कर देना काफ़ी समझते हैं कि जबकि सूरह फ़ातिहा का नुज़ूल ही नहीं हुआ था, जैसा कि मौसूफ़ ने भी लिखा है, तो उस मौक़े पर उसके रुकनियते-नमाज़ होने या उसकी फ़रज़ियत का सवाल ही क्या है? रिसालत के शुरूआती दौर में बहुत से इस्लामी अहकामात वजूद में नहीं आए थे जो बाद में बतलाए गये। फिर अगर कोई कहने लगे कि ये अहकाम रिसालत के शुरूआती ज़माने में नहीं थे तो उनका मानना ज़रूरी क्यों? शायद कोई भी अक़्ल वाला इन्सान इस बात को सहीह नहीं समझेगा। पहले सिर्फ़ दो नमाज़ें थीं, बाद में पाँच नमाज़ों का तरीक़ा जारी हुआ। पहले अज़ान भी न थी, बाद में अज़ान का सिलसिला जारी हुआ। मक्की ज़िन्दगी में रोज़े फ़र्ज़ नहीं थे, मदनी ज़िन्दगी में ये फ़र्ज़ आइद किया गया। फिर क्या मौसूफ़ की इस नाज़ुक दलील के आधार पर इन सारे उमूर का इन्कार किया जा सकता है? एक अदना तअम्मुल (सोच/विचार/ग़ौर) से ये हक़ीक़त वाज़ेह हो सकती थी, मगर जहाँ क़दम-क़दम पर मस्लकी व फ़िक़्ही जमूद (जड़ता Rigidness) काम कर रहा हो वहाँ वुस्अतनज़री की तलाश बेकार है। ख़ुलासा यह कि जब भी सूरह फ़ातिहा का नुज़ूल हुआ और नमाज़े-फ़र्ज़ या बाजमाअत नमाज़ का तरीक़ा इस्लाम में राइज़ (प्रचलित) हुआ,

इस सूरह फ़ातिहा को नमाज़ का रुक्न क़रार दिया गया। सूरह फ़ातिहा के नाज़िल होने से पहले बाजमाअ़त या फ़र्ज़ नमाज़ से पहले इन चीज़ों का कोई सवाल ही पैदा नहीं हो सकता। बाक़ी मबाहिष़ अपने मक़ाम पर आएंगे, इंशाअल्लाह!

हदीषे-क़ुदसी में सूरह फ़ातिहा को **'सलात (नमाज़)'** कहा गया है। शायद ऐतराज़ करने वाले साहब इस पर यूँ कहने लगें कि जब सूरह फ़ातिहा ही असल नमाज़ है तो इसके नाज़िल होने से पहले वाली नमाज़ों को नमाज़ कहना क्योंकर सहीह होगा? ख़ुलासा यह कि सूरह फ़ातिहा नमाज़ का एक ज़रूरी रुक्न है और ऐतराज़ करने वाले साहब का क़ौल सहीह नहीं। ये जवाब इस आधार पर है कि सूरह फ़ातिहा का नुज़ूल मक्का में न माना जाए, लेकिन अगर मान लिया जाए जैसा कि तफ़्सीर की किताबों से ष़ाबित है कि सूरह फ़ातिहा मक्का में नाज़िल हुई तो मक्का शरीफ़ ही में इसकी रुकनियत नमाज़ के लिये ष़ाबित होगी।

बाब 5 :

٥- بَابٌ

(5) मूसा बिन इस्माईल ने हमसे हदीष़ बयान की, उनको अबू अ़वाना ने ख़बर दी, उनसे मूसा इब्ने अबी आयशा ने बयान की, उनसे सईद बिन जुबैर ने, उन्होंने इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से कलामे इलाही (ला तुहर्रिक ....) की तफ़्सीर के सिलसिले में सुना कि रसूलुल्लाह (ﷺ) नुज़ूले क़ुर्आन के वक़्त बहुत सख़्ती महसूस किया करते थे और उसकी (अ़लामतों) में से एक ये थी कि याद करने के लिए आप अपने होंठों को हिलाते थे। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा मैं अपने होंठ हिलाता हूँ जिस तरह आप हिलाते थ। सईद कहते हैं मैं भी अपने होंठ हिलाता हूँ जिस तरह इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) को मैंने हिलाते हुए देखा। फिर उन्होंने अपने होंठ हिलाए। (इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) ने कहा) फिर ये आयत उतरी, 'ऐ मुहम्मद! क़ुर्आन को जल्दी-जल्दी याद करने के लिए अपनी ज़ुबान न हिलाओ। उसका जमा कर देना और पढ़ा देना मेरे ज़िम्मे है।

हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) कहते हैं कि यानी क़ुर्आन आप (ﷺ) के दिल में जमा देना और पढ़ा देना अल्लाह के ज़िम्मे है। फिर जब हम पढ़ चुके तो उस पढ़े हुए की इत्तिबाअ़ करो। इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) फ़र्माते हैं (इसका मत़लब यह है) कि आप उसको ख़ामोशी के साथ सुनते रहो। उसके बाद मत़लब समझा देना मेरे ज़िम्मे है। फिर यक़ीनन यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि आप इसको पढ़ो (यानी इसको महफ़ूज़ कर सको) चुनाँचे उसके बाद जब आपके पास हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम (वह्य लेकर) आते तो आप (तवज्जुह से) सुनते। जब वो चले जाते तो रसूलुल्लाह (ﷺ) उस (वह्य) को उसी त़रह पढ़ते जिस त़रह हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) ने उसे पढ़ा था। (दीगर मक़ामात : 4927, 4928, 4929, 5044, 7524)

٥- حَدَّثَنَا مُوْسَى بْنُ إِسْمَاعِيْلَ قَالَ: أَخْبَرَنَا أَبُو عَوَانَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا مُوْسَى بْنُ أَبِيْ عَائِشَةَ قَالَ: حَدَّثَنَا سَعِيْدُ بْنُ جُبَيْرٍ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ فِي قَوْلِهِ تَعَالَى: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ﴾ قَالَ: كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُعَالِجُ مِنَ التَّنْزِيْلِ شِدَّةً، وَكَانَ مِمَّا يُحَرِّكُ شَفَتَيْهِ، فَقَالَ ابْنُ عَبَّاسٍ: فَأَنَا أُحَرِّكُهُمَا لَكَ كَمَا كَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ يُحَرِّكُهُمَا. وَقَالَ سَعِيْدٌ: أَنَا أُحَرِّكُهُمَا كَمَا رَأَيْتُ ابْنَ عَبَّاسٍ يُحَرِّكُهُمَا - فَحَرَّكَ شَفَتَيْهِ - فَأَنْزَلَ اللهُ تَعَالَى: ﴿لاَ تُحَرِّكْ بِهِ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهِ إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهُ وَقُرْآنَهُ﴾ قَالَ: جَمْعَهُ لَكَ صَدْرُكَ وَتَقْرَأَهُ ﴿فَإِذَا قَرَأْنَاهُ فَاتَّبِعْ قُرْآنَهُ﴾ قَالَ: فَاسْتَمِعْ لَهُ وَأَنْصِتْ ﴿ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ﴾ ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا أَنْ تَقْرَأَهُ. فَكَانَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ بَعْدَ ذَلِكَ إِذَا أَتَاهُ جِبْرِيْلُ اسْتَمَعَ، فَإِذَا انْطَلَقَ جِبْرِيْلُ قَرَأَهُ النَّبِيُّ ﷺ كَمَا قَرَأَهُ.

[أطرافه في : ٤٩٢٧، ٤٩٢٨، ٤٩٢٩، ٥٠٤٤، ٧٥٢٤].

तश्रीह : हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने वह्य की इब्तिदाई कैफ़ियत के बयान में इस हदीष़ को नक़ल करना भी मुनासिब

समझा जिससे वह्य की अ़ज़्मत और सदाक़त पर भी रोशनी पड़ती है, इसलिये अल्लाह पाक ने इस आयते करीमा **'ला तुहर्रिक बिही लिसानक लि तअ़जल बिही'** (अल क़ियामा : 16) में आपको पूरे तौर पर तसल्ली दिलाई कि वह्य का नाज़िल करना, फिर आप (ﷺ) के दिल में जमा देना, उसकी पूरी तफ़्सीर आपको समझा देना, उसका हमेशा के लिये महफ़ूज़ रखना ये सारी ज़िम्मेदारियाँ अल्लाह की है। इब्तिदा में आप (ﷺ) को खटका रहता था कि कहीं हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) के जाने के बाद नाज़िलशुदा कलाम भूल न जाऊँ। इसलिये आप (ﷺ) उनके पढ़ने के साथ-साथ और याद करने के लिये अपनी ज़बाने मुबारक हिलाते रहते थे, उससे आप (ﷺ) को रोका गया और कामिल तवज्जुह के साथ ग़ौर से सुनने की हिदायत की गई, जिसके बाद आप (ﷺ) का यही मामूल हो गया। हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) आयते करीमा **'ला तुहर्रिक बिही'** नुज़ूल के वक़्त मौजूद नहीं थे। मगर बाद के ज़माने में जब आप भी आँहज़रत (ﷺ) वह्य के इब्तिदाई हालात बयान फ़र्माते तब इब्तिदा-ए-नुबुव्वत की पूरी तफ़्सील बयान फ़र्माया करते थे, होंठ हिलाने का मामला भी ऐसा ही है। ऐसा ही हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) ने अपने अ़हद में देखा और फ़ेअ़ले-नबवी (ﷺ) की इक़्तिदा में अपने होंठ हिलाकर इस हदीष़ को नक़ल फ़र्माया। फिर हज़रत सअ़द बिन जुबैर (रज़ि.) ने भी अपने दौर में इसे रिवायत करते वक़्त अपने होंठ हिलाए। इसीलिये इस हदीष़ को **'मुसलसल बि तहरीकिश्शफ़तैन'** कहा गया है। यानी एक ऐसी हदीष़ जिसके रावियों में होंठ हिलाने का तसलसुल पाया जाए। इसमें यह भी इशारा है कि वह्य की हिफ़ाज़त के लिये इसके नुज़ूल के वक़्त की हरकतों व सकनाते नबविया (ﷺ) तक को बज़रिये नक़ल दर नक़ल महफ़ूज़ रखा गया। आयत शरीफ़ा **'षुम्म इन्न अ़लैना बयानह'** में हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) का इशारा इस तरफ़ भी है कि क़ुर्आन मजीद की अ़मली तफ़्सीर जो आँहज़रत (ﷺ) ने बयान फ़र्माई और अपने अ़मल से दिखलाई। ये भी सब अल्लाह की वह्य के तहत है, इससे हदीषे नबवी (ﷺ) की अ़ज़्मत ज़ाहिर होती है। जो लोग हदीषे नबवी (ﷺ) में शक व शुबहे पैदा करते हैं उनको ग़लत क़रार देने की **मज़्मूम** (बेजा/निन्दित) कोशिश करते हैं उनके बातिल ख़यालात की भी यहाँ पूरी तर्दीद मौजूद है। सहीह मर्फ़ूअ़ हदीष़ यक़ीनन वह्य है। फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है क़ुर्आनी वह्य को वह्ये-मतलू और हदीष़ को वह्ये-ग़ैर मतलू क़रार दिया गया है। मज़्कूरा हदीष़ से **मुअ़ल्लिम** (पढ़ाने वाले) और **मुतअ़ल्लिम** (तालीम पाने वाले) के आदाब पर भी रोशनी पड़ती है कि आँहज़रत (ﷺ) को एक मुतअ़ल्लिम की हैषियत में इस्तिमाअ़ (सुनने) और इन्सात की हिदायत फ़र्माई गई। इस्तिमाअ़ कानों का फ़ेअ़ल है और इन्सात बक़ौल हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) आँखों से होता है। लिहाजा मुतअल्लिम के लिये ज़रूरी है कि दर्स के वक़्त अपने कानों और आँखों से मुअ़ल्लिम पर पूरी तवज्जुह से काम ले। उसके चेहरे पर नज़र ज़माए रखे, लबो-लहजे के इशारों को समझने के लिये निगाह उस्ताद की तरफ़ भी उठती हो। क़ुर्आन मजीद व हदीष़ शरीफ़ की अ़ज़्मत का यही तक़ाज़ा है कि इन दोनों का दर्स लेते वक़्त मुतअ़ल्लिम **हमातनगोश** (एकाग्रचित्त) हो जाए और पूरे तौर पर सुनने व समझने की कोशिश करे। हालते ख़ुत्बा में **सामेईन** (श्रोताओं) के लिये इसी इस्तिमाअ़ व इन्सात की हिदायत है। नुज़ूले वह्य के वक़्त आप (ﷺ) पर सख़्ती और शिद्दत का तारी होना, इसलिये था कि ख़ुद अल्लाह पाक ने फ़र्माया है, **'इन्ना सनुल्क़ी अ़लैक क़ौलन षक़ीला'** बेशक मैं आप पर भारी व अ़ज़मत वाला कलाम नाज़िल करने वाला हूँ। पिछली हदीष़ में गुज़र चुका है कि नुज़ूले वह्य के वक़्त सख़्त सर्दी के मौसम में भी आप (ﷺ) पसीने-पसीने हो जाते थे। वही कैफ़ियत यहाँ बयान की गई है। आयते शरीफ़ा में ज़बान हिलाने से मना किया गया है और हदीषे हाज़ा में होठ हिलाने का ज़िक्र है। यहाँ रावी ने इख़्तिसार (संक्षेप) से काम लिया है। किताबुत्तफ़्सीर में हज़रत ज़रीर ने मूसा बिन अबी आइशा से इस वाक़िये की तफ़्सील में होठों के साथ ज़बान हिलाने का भी ज़िक्र फ़र्माया है। **'कान रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम इज़ा नज़ल जिब्रईलु बिल वह्यि फ़ कान मिम्मा युहर्रिकु बिलिसानिही व शफ़तैहि'** इस सूरत में आयत व हदीस में कोई तअ़ारुज़ (झगड़ा) नहीं रहता।

रावियाने हदीष़ : हज़रत मूसा बिन इस्माईल मुन्क़री, मुन्क़र बिन उ़बैद अल हाफ़िज़ की तरफ़ मन्सूब हैं जिनका इंतिक़ाल बसरा में 223 हिजरी माहे रजब में हुआ। अबू अवाना वज़ाह बिन अ़ब्दुल्लाह हैं जिनका 196 हिजरी में इंतिक़ाल हुआ। मूसा बिन अबी आइशा अल कूफ़ी अल हम्दानी हैं। सईद बिन जुबैर बिन हिशाम अल कूफ़ी अल असदी हैं जिनको 92 हिजरी में मज़्लूमाना हालत में हज्जाज बिन यूसुफ़ षक़फ़ी ने निहायत ही बेदर्दी के साथ क़त्ल किया था जिनकी बद् दुआ से हज्जाज फिर जल्दी ही ग़ारत हो गया।

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) को तर्जमानुल कुर्आन कहा गया है। रसूलुल्लाह (ﷺ) ने उनके लिये फ़हमे-कुर्आन की दुआ फ़र्माई थी। 68 हिजरी में ताइफ़ में उनका इंतिक़ाल हुआ। सहीह बुख़ारी में उनकी रिवायत से दो सौ सत्रह (217) अहादीष़ नक़ल की गई हैं। (क़स्तलानी)

बाब 6 :

(6) हमको अ़ब्दान ने ह़दीष़ बयान की, उन्हें अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने ख़बर दी, उनको यूनुस ने, उन्होंने ज़ुहरी से यह ह़दीष़ सुनी। (दूसरी सनद ये है कि) हमसे बिशर बिन मुहम्मद ने ये ह़दीष़ बयान की। उनसे अ़ब्दुल्लाह बिन मुबारक ने, उनसे यूनुस और मअ़मर दोनों ने, इन दोनों ने ज़ुहरी से रिवायत की पहली सनद के मुताबिक़ ज़ुहरी से उ़बैदुल्लाह बिन अ़ब्दुल्लाह ने, उन्होंने ह़ज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़ि.) से ये रिवायत नक़ल की कि रसूलुल्लाह (ﷺ) सब लोगों से ज़्यादा जव्वाद (सख़ी) थे और रमज़ान में (दूसरे औक़ात के मुक़ाबले में जब) जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) आप (ﷺ) से मिलते तो बहुत ही ज़्यादा जूदो-करम फ़र्माते। जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) रमज़ान की हर रात में आप (ﷺ) से मुलाक़ात करते और आप (ﷺ) के साथ कुर्आन का दौर करते, ग़र्ज़ आँहज़रत (ﷺ) लोगों को भलाई पहुँचाने में बारिश लाने वाली हवा से भी ज़्यादा जूदो-करम फ़र्माया करते थे।

(दीगर मक़ामात : 1902, 3220, 3554, 4997)

بَابٌ

٦- حَدَّثَنَا عَبْدَانُ قَالَ : أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ أَخْبَرَنَا يُونُسُ عَنِ الزُّهْرِيِّ. قَالَ: وَحَدَّثَنَا بِشْرُ بْنُ مُحَمَّدٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا عَبْدُ اللهِ قَالَ: أَخْبَرَنَا يُونُسُ وَمَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ نَحْوَهُ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ قَالَ : كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ أَجْوَدَ النَّاسِ، وَكَانَ أَجْوَدُ مَا يَكُونُ فِي رَمَضَانَ حِيْنَ يَلْقَاهُ جِبْرِيلُ، وَكَانَ يَلْقَاهُ فِي كُلِّ لَيْلَةٍ مِنْ رَمَضَانَ فَيُدَارِسُهُ الْقُرْآنَ. فَلَرَسُولُ اللهِ ﷺ أَجْوَدُ بِالْخَيْرِ مِنَ الرِّيحِ الْمُرْسَلَةِ.

[أطرافه في : ١٩٠٢، ٣٢٢٠، ٣٥٥٤، ٤٩٩٧].

तश्रीह : इस हदीष़ की मुनासबत बाब से ये है कि रमज़ान शरीफ़ में हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) आप (ﷺ) से कुर्आन मजीद का दौर किया करते थे तो मा'लूम हुआ कि कुर्आन यानी वह्य का नुज़ूल रमज़ान शरीफ़ में शुरू हुआ। जैसा कि आयते शरीफ़ा **'शहरु रमज़ानल्लज़ी उन्ज़िल फ़ीहिल क़ुर्आन'** (अल बक़र : 185) में ज़िक्र किया गया है। ये नुज़ूले कुर्आन लौहे महफ़ूज़ से बैतुल इ़ज़्ज़त में समाउद्दुनिया की तरफ़ था। फिर वहाँ से आँहज़रत (ﷺ) पर नुज़ूल भी रमज़ान शरीफ़ ही में शुरू हुआ। इसीलिये रमज़ान शरीफ़ कुर्आन करीम के लिये सालाना यादगार महीना क़रार पाया और इसीलिये इस माहे मुबारक में आप (ﷺ) और हज़रत जिब्रईल (अ़लैहिस्सलाम) कुर्आन मजीद का बाक़ायदा दौर फ़र्माया करते थे। साथ ही आप (ﷺ) के 'जूद' का ज़िक्रे-ख़ैर भी किया गया। सख़ावत ख़ास़ माल की तक़्सीम का नाम है और जूद के मा'ने **'इअ़ताउ मा यम्बग़ी लिमन यम्बग़ी'** के हैं जो बहुत ही ज़्यादा उ़मूमियत लिये हुए हैं। लिहाज़ा जूद माल ही पर **मौक़ूफ़** (मुन्हसिर/निर्भर) नहीं बल्कि जो शय भी जिसके लिये मुनासिब हो दे दी जाए, इसलिये आप (ﷺ) जूदुन्नास थे। हाजतमन्दों के लिये माली सख़ावत, इल्म के प्यासों के लिये इल्मी सख़ावत, गुमराहों के लिये रूहानी फ़ैज़ की सख़ावत, अल ग़रज़ आप (ﷺ) हर लिहाज़ से **तमाम बनी नोअ़े इन्सानी** (सम्पूर्ण मानव जाति) में बेहतर **सख़ी** (दानी) थे। आपकी जुम्ला सख़ावत की **तफ़्सीलात** (विवरण) हदीष़ की किताबों और सीरत में नक़ल की गई है। आप (ﷺ) की जूदो-सख़ावत की **तश्बीह** (उपमा) बारिश लाने वाली हवाओं से दी गई है जो कि बहुत ही मुनासिब है। बाराने-रहमत से ज़मीन **सरसब्ज़ व शादाब** (हरी भरी व मनोरम) हो जाती है। आपकी जूदो-सख़ावत से बनी नोअ़े इन्सानी की उजड़ी हुई दुनिया आबाद हो गई। हर तरफ़ हिदायत के दरिया बहने लगे। ख़ुदाशनासी और **अख़्लाक़े फ़ाज़िला** (उच्च चरित्र) के समन्दर मौजें मारने लगे। आप (ﷺ) की सख़ावत और रूहानी कमालात से सारी दुनिया के इन्सानों ने फ़ैज़ हासिल किये और ये मुबारक सिलसिला दुनिया के क़ायम

रहने तक क़ायम रहेगा क्योंकि आप (ﷺ) पर नाज़िल होने वाला कुर्आन मजीद वह्ये-मतलू और और अहादीष़ शरीफ़ वह्ये-ग़ैर मतलू तब तक क़ायम रहने वाली चीज़ें हैं जब तक दुनिया क़ायम रहेगी। लिहाज़ा दुनिया में आने वाली तमाम इन्सानियत उनसे फ़ैज़ हासिल करती रहेगी। इससे वह्य की अज़्मत भी ज़ाहिर होती है और यह भी कि कुर्आन व हदीष़ की तालीम देने वाले और तालीम हासिल करने वाले लोगों को, दूसरे लोगों के बनिस्बत ज़्यादा सख़ी, जूद व **वसीउल क़ल्ब** (सहृदय/बड़े दिलवाला) होना चाहिये कि उनकी शान का यही तक़ाज़ा है। ख़ुसूसन रमज़ान शरीफ़ का महीना जूदो सख़ावत का महीना है कि इसमें एक नेकी का ष़वाब कितने ही कितने ही (गुना ज़्यादा) दर्जात हासिल कर लेता है। जैसा कि नबी-ए-करीम (ﷺ) इस माह में ख़ुसूसियत के साथ अपनी ज़ाहिरी व बातिनी सख़ावत के दरिया बहा देते थे।

सनदे-हदीष़ : पहला मौक़ा है कि इमाम बुख़ारी ने यहाँ सनदे हदीष़ में तहवील फ़र्माई है। यानी इमाम ज़ुहरी तक सनद पहुँचा देने के बाद आप फिर दूसरी सनद की तरफ़ लौट आए हैं अब्दान पहले उस्ताद के साथ अपने दूसरे उस्ताद बिशर बिन मुहम्मद की रिवायत से भी इस हदीष़ को नक़ल फ़र्माया है और ज़ुहरी पर दोनों सनदों को यक्जा कर दिया। मुहद्दिष़ीन की **इस्तलाह** (परिभाषा) में लफ़्ज़ 'हे' से यही तहवील मुराद होती है। इससे तहवीले-सनद और सनद में **इख़्तिसार** (संक्षेप) मक़सूद होता है। आगे इस क़िस्म के बहुत सारे मौक़े आते रहेंगे। बक़ौल अल्लामा क़स्तलानी (रह.) इस हदीष़ की सनद में रिवायते हदीष़ की मुख़्तलिफ़ क़िस्में तहदीष़, **अख़बार** (खबरें), अनअना, तहवील सब जमा हो गई हैं। जिसकी तफ़्सीलात मुक़द्दमा में बयान की जाएंगी, इंशा अल्लाह!

٧- حَدَّثَنَا أَبُو الْيَمَانِ الْحَكَمُ بْنُ نَافِعٍ قَالَ: أَخْبَرَنَا شُعَيْبٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ قَالَ: أَخْبَرَنِي عُبَيْدُ اللهِ بْنُ عَبْدِ اللهِ بْنِ عُتْبَةَ بْنِ مَسْعُودٍ أَنَّ عَبْدَ اللهِ بْنَ عَبَّاسٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ أَبَا سُفْيَانَ بْنَ حَرْبٍ أَخْبَرَهُ أَنَّ هِرَقْلَ أَرْسَلَ إِلَيْهِ فِي رَكْبٍ مِنْ قُرَيْشٍ، وَكَانُوا تُجَّارًا بِالشَّامِ فِي الْمُدَّةِ الَّتِي كَانَ رَسُولُ اللهِ ﷺ مَادَّ فِيهَا أَبَا سُفْيَانَ وَكُفَّارَ قُرَيْشٍ، فَأَتَوْهُ وَهُمْ بِإِيْلِيَاءَ فَدَعَاهُمْ فِي مَجْلِسِهِ وَحَوْلَهُ عُظَمَاءُ الرُّومِ، ثُمَّ دَعَاهُمْ وَدَعَا تَرْجُمَانَهُ فَقَالَ : أَيُّكُمْ أَقْرَبُ نَسَبًا بِهَذَا الرَّجُلِ الَّذِي يَزْعُمُ أَنَّهُ نَبِيٌّ؟ فَقَالَ أَبُو سُفْيَانَ : فَقُلْتُ أَنَا أَقْرَبُهُمْ نَسَبًا. فَقَالَ: أَدْنُوهُ مِنِّي، وَقَرِّبُوا أَصْحَابَهُ فَاجْعَلُوهُمْ عِنْدَ ظَهْرِهِ. ثُمَّ قَالَ لِتَرْجُمَانِهِ: قُلْ لَهُمْ إِنِّي سَائِلٌ عَنْ هَذَا الرَّجُلِ، فَإِنْ

(7) हमको अबुल यमान हकम बिन नाफ़ेअ ने यह हदीष़ बयान की, उन्हें इस हदीष़ की शुऐब ने ख़बर दी। उन्होंने ज़ुहरी से ये हदीष़ सुनी। उन्हें उ़बैदुल्लाह इब्ने अ़ब्दुल्लाह इब्ने उ़त्बा बिन मसऊ़द ने ख़बर दी कि अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास (रज़ि.) से अबू सुफ़यान बिन हर्ब ने वाक़िआ बयान किया कि हिरक़्ल (शाहे रूम) ने उनके पास क़ुरैश के काफ़िले में एक आदमी बुलाने को भेजा और उस वक़्त ये लोग तिजारत के लिए मुल्के शाम गए हुए थे और ये ज़माना था जब रसूलुल्लाह (ﷺ) ने क़ुरैश और अबू सुफ़यान से एक वक़्ती अ़हद (सामयिक समझौता) किया हुआ था। जब अबू सुफ़यान और दूसरे लोग हिरक़्ल के पास ऐलिया पहुँचे जहाँ हिरक़्ल ने दरबार तलब किया था। उसके आस-पास बड़े-बड़े लोग (उ़लमा, वज़ीर, उमरा) बैठे हुए थे। हिरक़्ल ने उनको और अपने तर्जुमान (दुभाषिये) को बुलवाया। फिर उनसे पूछा कि तुममें से कौन शख़्स मुद्दइये-रिसालत (रिसालत के दावेदार) के ज़्यादा क़रीबी अ़ज़ीज़ है? अबू सुफ़यान कहते हैं कि मैं बोल उठा कि मैं उसका सबसे ज़्यादा क़रीबी रिश्तेदार हूँ। (ये सुनकर) हिरक़्ल ने हुक्म दिया कि उसको (अबू सुफ़यान को) मेरे क़रीब लाकर बैठाओ और उसके साथियों को उसकी पीठ के पीछे बिठा दो। फिर अपने तर्जुमान से कहा कि इन लोगों से कह दो कि मैं अबू

كَذَبَنِي فَكَذِّبُوهُ. فَوَ اللهِ لَوْ لا الْحَيَاءُ مِنْ أَنْ يَأْثِرُوا عَلَيَّ كَذِبًا لَكَذَبْتُ عَنْهُ. ثُمَّ كَانَ أَوَّلَ مَا سَأَلَنِيْ عَنْهُ أَنْ قَالَ: كَيْفَ نَسَبُهُ فِيكُمْ؟ قُلْتُ: هُوَ فِيْنَا ذُوْ نَسَبٍ. قَالَ: فَهَلْ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ مِنْكُمْ أَحَدٌ قَطُّ قَبْلَهُ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَأَشْرَافُ النَّاسِ اتَّبَعُوْهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُم؟ فَقُلْتُ: بَلْ ضُعَفَاؤُهُم. قَالَ: أَيَزِيْدُونَ أَمْ يَنْقُصُوْنَ؟ قُلْتُ: بَلْ يَزِيْدُوْنَ. قَالَ: فَهَلْ يَرْتَدُّ أَحَدٌ مِنهُمْ سَخْطَةً لِدِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيْهِ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ؟ قُلْتُ: لاَ. قَالَ: فَهَلْ يَغْدِرُ؟ قُلْتُ: لاَ، وَنَحْنُ مِنْهُ فِي مُدَّةٍ لاَ نَدْرِيْ مَا هُوَ فَاعِلٌ فِيْهَا.

قَالَ: وَلَم تُمْكِنِّي كَلِمَةٌ أُدْخِلَ فِيْهَا شَيئاً غَيْرَ هَذِهِ الْكَلِمَةِ. قَالَ: فَهَلْ قَاتَلْتُمُوْهُ؟ قُلْتُ نَعَمْ. قَالَ: فَكَيْفَ كَانَ قِتَالُكُمْ إِيَّاهُ؟ قُلْتُ: الْحَرْبُ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُ سِجَالٌ، يَنَالُ مِنَّا وَنَنَالُ مِنْهُ. قَالَ: مَا ذَا يَأْمُرُكُمْ؟ قُلْتُ: يَقُوْلُ اعْبُدُوا اللهَ وَحْدَهُ وَلاَ تُشْرِكُوْا بِهِ شَيْئًا. وَاتْرُكُوْا مَا يَقُولُ آبَاؤُكُمْ: وَيَأْمُرُنَا بِالصَّلاَةِ وَالصِّدْقِ وَالعَفَافِ وَالصِّلَةِ. فَقَالَ لِلتَّرْجُمَانِ: قُلْ لَهُ سَأَلْتُكَ عَنْ نَسَبِهِ فَذَكَرْتَ أَنَّهُ فِيْكُمْ ذُو نَسَبٍ، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ تُبْعَثُ فِي نَسَبِ قَوْمِها. وَسَأَلْتُكَ هَلْ قَالَ أَحَدٌ مِنْكُمْ هَذَا الْقَوْلَ؟ فَذَكَرْتَ

सुफ़यान से उस शख़्स के (यानी हज़रत मुहम्मद ﷺ के) हालात पूछता हूँ। अगर ये मुझसे किसी बात में झूठ बोल दे तो तुम उसका झूठ जाहिर कर देना। (अबू सुफ़यान का क़ौल है कि) अल्लाह की क़सम! अगर ये ग़ैरत न आती कि ये लोग मुझको झुठलाएँगे तो मैं आप (ﷺ) की निस्बत ज़रूर ग़लतगोई से काम लेता। ख़ैर पहली बात जो हिरक़्ल ने मुझसे पूछी वो ये कि उस शख़्स का ख़ानदान तुम लोगों में कैसा है? मैंने कहा वो तो बड़े ऊँचे आली नसब वाले हैं। कहने लगा उससे पहले भी किसी ने तुम लोगों में ऐसी बात कही थी? मैंने कहा नहीं! वो कहने लगा, उसके बड़ों में कोई बादशाह हुआ है? मैंने कहा नहीं! फिर उसने कहा, बड़े लोगों ने उसकी पैरवी इख़्तियार की है या कमज़ोरों ने? मैंने कहा, कमज़ोरों ने। फिर कहने लगा, उसके मानने वाले रोज़ बढ़ते जाते हैं या फिर कोई साथी फिर भी जाता है? मैंने कहा नहीं! कहने लगा, क्या अपने इस दा'वा (ए-नुबुव्वत) से पहले कभी (किसी भी मौक़े पर) उसने झूठ बोला है? मैंने कहा नहीं! और अब हमारी उससे (सुलह की) एक मुक़र्रर मुद्दत ठहरी हुई है मा'लूम नहीं कि वो इसमें क्या करने वाला है। (अबू सुफ़यान कहते हैं) मैं इस बात के सिवा और कोई (झूठ) उस बातचीत में शामिल न कर सका। हिरक़्ल ने कहा। क्या तुम्हारी उससे कभी लड़ाई हुई है? हमने कहा, हाँ! फिर तुम्हारी और उसकी जंग का क्या हाल होता है? मैंने कहा, लड़ाई डोल की तरह है। कभी वो हमसे (मैदाने जंग) जीत लेते हैं और कभी हम उनसे जीत लेते हैं। हिरक़्ल ने पूछा, वो तुम्हें किस बात का हुक्म देता है? मैंने कहा, वो कहता है कि सिर्फ़ एक अल्लाह ही की इबादत करो, उसका किसी को शरीक न बनाओ और अपने बाप-दादा की (शिर्क की) बातें छोड़ दो और हमें नमाज़ पढ़ने, सच बोलने, परहेज़गारी और सिलह रहमी का हुक्म देता है। (ये सब सुनकर) फिर हिरक़्ल ने अपने तर्जुमान से कहा कि अबू सुफ़यान से कह दे कि मैंने तुमसे उसका नसब पूछा तो तुमने कहा कि वो हममें आली नसब है और पैग़म्बर अपनी क़ौम में आली नसब ही भेजे जाया करते हैं। मैंने तुमसे पूछा कि (दा'वा नुबुव्वत की) ये बात तुम्हारे अंदर इससे पहले भी किसी

और ने कही थी, तो तुमने जवाब दिया कि नहीं! तब मैंने (अपने दिल में) कहा कि अगर ये बात उससे पहले किसी ने कही होती तो मैं समझता कि उस शख़्स ने भी उसी बात की तक़्लीद की है जो पहले कही जा चुकी है। मैंने तुमसे पूछा था कि उसके बड़ों में कोई बादशाह भी गुज़रा है, तुमने कहा कि नहीं! तो मैंने (दिल में) कहा कि उनके बुज़ुर्गों में से कोई बादशाह हुआ होगा तो कह दूँगा कि वो शख़्स (इस बहाने) अपने आबा व अजदाद की बादशाहत और उनका मुल्क (दोबारा) हासिल करना चाहता है। और मैंने तुमसे पूछा कि इस बात के कहने (यानी पैग़म्बरी का दावा करने) से पहले तुमने कभी उसपर झूठ बोलने का इल्ज़ाम लगाया है, तो तुमने कहा कि नहीं! तो मैंने समझ लिया कि जो शख़्स आदमियों के साथ झूठ बोलने से बचे वो अल्लाह के बारे में कैसे झूठी बात कह सकता है। और मैंने तुमसे पूछा कि बड़े लोग उसके पैरो होते हैं या कमज़ोर आदमी? तुमने कहा कमज़ोरों ने उसकी पैरवी की है, तो (दरअसल) यही लोग पैग़म्बरों के मानने वाले होते हैं। और मैंने तुमसे पूछा कि उसके साथी बढ़ रहे हैं या कम हो रहे हैं? तुमने कहा कि वो बढ़ रहे हैं और ईमान की कैफ़ियत यही होती है। यहाँ तक कि वो कामिल हो जाता है। और मैंने तुमसे पूछा कि क्या कोई शख़्स उसके दीन से नाख़ुश होकर मुर्तद भी हो जाता है? तुमने कहा नहीं, तो ईमान की ख़ासियत भी यही है जिनके दिलों में इसकी मुसर्रत रच बस जाए वो इससे लौटा नहीं करते। और मैंने तुमसे पूछा कि क्या वो कभी वा'दा-ख़िलाफ़ी करते हैं? तुमने कहा नहीं! पैग़म्बरों का यही हाल होता है, वो अहद की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करते। और मैंने तुमसे कहा कि वो तुमसे किस चीज़ के लिए कहते हैं? तुमने कहा कि वो हमें हुक्म देते हैं कि अल्लाह की इबादत करो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ और तुम्हें बुतों की परस्तिश से रोकते हैं। सच बोलने और परहेज़गारी का हुक्म देते हैं। लिहाज़ा अगर ये बातें जो तुम कह रहे हो सच हैं तो अनक़रीब वो इस जगह का मालिक हो जाएगा कि जहाँ मेरे ये दोनों पांव हैं। मुझे मा'लूम था कि वो

أَنْ لاَ، فَقُلْتُ : لَوْ كَانَ أَحَدٌ قَالَ هَذَا الْقَوْلَ قَبْلَهُ لَقُلْتُ رَجُلٌ يَتَأَسَّى بِقَوْلٍ قِيلَ قَبْلَهُ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كَانَ مِنْ آبَاءِهِ مِنْ مَلِكٍ. فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، قُلْتُ فَلَو كَانَ مِنْ آبَائِهِ مِنْ مَلِكٍ قُلْتُ رَجُلٌ يَطْلُبُ مُلْكَ أَبِيهِ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ كُنْتُمْ تَتَّهِمُونَهُ بِالْكَذِبِ قَبْلَ أَنْ يَقُولَ مَا قَالَ ؟ فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، فَقَدْ أَعْرِفُ أَنَّهُ لَمْ يَكُنْ لِيَذَرَ الْكَذِبَ عَلَى النَّاسِ وَيَكْذِبَ عَلَى اللهِ. وَسَأَلْتُكَ أَشْرَافُ النَّاسِ اتَّبَعُوهُ أَمْ ضُعَفَاؤُهُمْ ؟ فَذَكَرْتَ أَنَّ ضُعَفَاءَهُمُ اتَّبَعُوهُ، وَهُمْ أَتْبَاعُ الرُّسُلِ، وَسَأَلْتُكَ أَيَزِيدُونَ أَمْ يَنْقُصُونَ؟ فَذَكَرْتَ أَنَّهُمْ يَزِيدُونَ، وَكَذَلِكَ أَمْرُ الإِيْمَانِ حَتَّى يَتِمَّ. وَسَأَلْتُكَ أَيَرْتَدُّ أَحَدٌ سَخْطَةً لِدِينِهِ بَعْدَ أَنْ يَدْخُلَ فِيهِ، فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، وَكَذَلِكَ الإِيْمَانُ حِيْنَ تُخَالِطُ بَشَاشَتُهُ الْقُلُوبَ. وَسَأَلْتُكَ هَلْ يَغْدِرُ ؟ فَذَكَرْتَ أَنْ لاَ، وَكَذَلِكَ الرُّسُلُ لاَ تَغْدِرُ. وَسَأَلْتُكَ بِمَا يَأْمُرُكُمْ؟ فَذَكَرْتَ أَنَّهُ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَعْبُدُوا اللهَ وَلاَ تُشْرِكُوا بِهِ شَيْئًا وَيَنْهَاكُمْ عَنْ عِبَادَةِ الأَوْثَانِ وَيَأْمُرُكُمْ بِالصَّلاَةِ وَالصِّدْقِ وَالْعَفَافِ، فَإِنْ كَانَ مَا تَقُولُ حَقًّا فَسَيَمْلِكُ مَوْضِعَ قَدَمَيَّ هَاتَيْنِ. وَقَدْ كُنْتُ أَعْلَمُ أَنَّهُ خَارِجٌ وَ لَمْ أَكُنْ أَظُنُّ أَنَّهُ مِنْكُمْ، فَلَو أَنِّيْ أَعْلَمُ أَنِّي أَخْلُصُ إِلَيْهِ لَتَجَشَّمْتُ لِقَاءَهُ، وَلَوْ كُنْتُ عِنْدَهُ لَغَسَلْتُ عَنْ قَدَمَيْهِ. ثُمَّ دَعَا بِكِتَابِ رَسُولِ اللهِ ﷺ

(पैग़म्बर) आने वाला है मगर मुझे ये मा'लूम नहीं था कि वो तुम्हारे अंदर होगा। अगर मैं जानता कि उस तक पहुँच सकूँगा तो उससे मिलने के लिए हर तकलीफ़ गवारा करता। अगर मैं उसके पास होता तो उसक पांव धोता। हिरक़्ल ने रसूलुल्लाह (ﷺ) का वो ख़त्त मंगाया जो आपने दह्या कलबी (रज़ि.) के ज़रिये हाकिमे बसरा के पास भेजा था और उसने वो हिरक़्ल के पास भेज दिया था। फिर उसको पढ़ा तो उसमें (लिखा था),

अल्लाह के नाम के साथ जो निहायत मेहरबान और रहमवाला है। अल्लाह के बंदे और उसके पैग़म्बर मुहम्मद (ﷺ) की तरफ़ से ये ख़त्त है अज़ीमे-रूम के लिए। उस शख़्स पर सलाम हो जो हिदायत की पैरवी करे। उसके बाद में आपके सामने दा'वते इस्लाम पेश करता हूँ। अगर इस्लाम ले आएँगे तो (दीनो दुनिया में) सलामती नसीब होगी। अल्लाह आपको दोहरा सवाब देगा और अगर आप (मेरी दा'वत से) रूगर्दानी करेंगे तो आपकी रिआया का गुनाह भी आप ही पर होगा। और ऐ अहले किताब! एक ऐसी बात पर आ जाओ जो हमारे और तुम्हारे बीच एक जैसी है। वो यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करें और किसी को उसका शरीक न बनाएँ और न हममें से कोई किसी को अल्लाह के सिवा अपना रब बनाए। फिर अगर वो अहले किताब (इस बात से) मुँह फेर लें तो (मुसलमानों!) तुम उनसे कह दो कि (तुम मानो या न मानो हम तो एक ख़ुदा के इताअत गुज़ार हैं। अबू सुफ़यान कहते हैं, जब हिरक़्ल ने जो कुछ कहना था कह दिया और पढ़कर फ़ारिग़ हुआ तो उसके आसपास शोरो-गुल हुआ। बहुत सी आवाज़ें उठीं और हमें बाहर निकाल दिया गया। तब मैंने अपने साथियों से कहा कि अबू कबशा के बेटे (आँहज़रत ﷺ) का मुआमला तो बहुत बढ़ गया। (देखो तो) उससे बनी असफ़र (रूम) का बादशाह भी डरता है। मुझे उस वक़्त से इस बात का यक़ीन हो गया कि हुज़ूर (ﷺ) अनक़रीब ग़ालिब होकर रहेंगे यहाँ तक कि अल्लाह ने मुझे मुसलमान बना दिया। (रावी का बयान है कि) इब्ने नातूर ईलया का हाकिम हिरक़्ल का मुसाहिब और शाम के नसारा का लाट पादरी बयान करता था कि हिरक़्ल जब

الَّذِيْ بَعَثَ بِهِ مَعَ دِحْيَةَ الْكَلْبِيِّ إِلَى عَظِيمِ بُصْرَى، فَدَفَعَهُ عَظِيمُ بُصْرَى إِلَى هِرَقْلَ، فَقَرَأَهُ، فَإِذَا فِيهِ:

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ
مِنْ مُحَمَّدٍ عَبْدِ اللهِ وَرَسُوْلِهِ إِلَى
هِرَقْلَ عَظِيْمِ الرُّوْمِ.

سَلاَمٌ عَلَى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدَى، أَمَّا بَعْدُ فَإِنِّي أَدْعُوكَ بِدِعَايَةِ الإِسْلاَمِ، أَسْلِمْ تَسْلَمْ يُؤْتِكَ اللهُ أَجْرَكَ مَرَّتَيْنِ. فَإِنْ تَوَلَّيْتَ فَإِنَّ عَلَيْكَ إِثْمَ الْيَرِيْسِيِّيْنَ وَ ﴿ يَا أَهْلَ الْكِتَابِ تَعَالَوْا إِلَى كَلِمَةٍ سَوَاءٍ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَنْ لاَ نَعْبُدَ إِلاَّ اللهَ وَلاَ نُشْرِكَ بِهِ شَيْئًا وَلاَ يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِنْ دُوْنِ اللهِ، فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِأَنَّا مُسْلِمُوْنَ﴾.

قَالَ أَبُو سُفْيَانَ : فَلَمَّا قَالَ مَا قَالَ، وَفَرَغَ مِنْ قِرَاءَةِ الْكِتَابِ، كَثُرَ عِنْدَهُ الصَّخَبُ، وَارْتَفَعَتِ الأَصْوَاتُ، وَأُخْرِجْنَا. فَقُلْتُ لأَصْحَابِيْ حِيْنَ أُخْرِجْنَا : لَقَدْ أَمِرَ أَمْرُ ابْنِ أَبِي كَبْشَةَ، إِنَّهُ يَخَافُهُ مَلِكُ بَنِي الأَصْفَرِ. فَمَا زِلْتُ مُوْقِنًا أَنَّهُ سَيَظْهَرُ حَتَّى أَدْخَلَ اللهُ عَلَيَّ الإِسْلاَمَ.

وَكَانَ ابْنُ النَّاطُورِ - صَاحِبُ إِيْلِيَاءَ وَهِرَقْلَ - أُسْقُفٌ عَلَى نَصَارَى الشَّامِ يُحَدِّثُ أَنَّ هِرَقْلَ حِيْنَ قَدِمَ إِيلِيَاءَ أَصْبَحَ خَبِيْثَ النَّفْسِ، فَقَالَ بَعْضُ بَطَارِقَتِهِ: قَدِ اسْتَنْكَرْنَا هَيْئَتَكَ. قَالَ ابْنُ النَّاطُورِ: وَكَانَ

ईलया आया। एक दिन सुबह को परेशान उठा तो उसके दरबारियों ने पूछा कि आज हम आपकी हालत बदली हुई पाते हैं (क्या वजह है?) इब्ने नातूर का बयान है कि हिरक़्ल नुजूमी था, इल्मे नुजूम में वो पूरी तरह माहिर था। उसने अपने हमनशीनों को बताया कि मैंने आज रात सितारों पर नज़र डाली तो देखा कि ख़त्ना करने वालों का बादशाह हमारे मुल्क पर ग़ालिब आ गया है। (भला) इस ज़माने में कौन लोग ख़त्ना करते हैं? उन्होंने कहा कि यहूद के सिवा कोई ख़त्ना नहीं करता। सो उनकी वजह से परेशान न हों। सल्तनत के तमाम शहरों में ये हुक्म लिख भेजिये कि वहाँ जितने यहूदी हों सब क़त्ल कर दिए जाएँ वो लोग उन्हीं बातों में मशग़ूल थे कि हिरक़्ल के पास एक आदमी लाया गया जिसे शाहे ग़स्सान ने भेजा था। उसने रसूलुल्लाह (ﷺ) के हालात बयान किए। जब हिरक़्ल ने (सारे हालात) सुन लिए तो कहा कि जाकर देखो वो ख़त्ना किए हुए हैं या नहीं? उन्होंने उसे देखा तो बतलाया कि वो ख़त्ना किया हुआ है। हिरक़्ल ने जब उस शख़्स से अरब के बारे में पूछा तो उसने बतलाया कि वो ख़त्ना करते हैं। तब हिरक़्ल ने कहा कि ये ही (मुहम्मद ﷺ) इस उम्मत के बादशाह हैं जो पैदा हो चुके हैं। फिर उसने अपने एक दोस्त को रूमिया ख़त लिखा और वो भी इल्मे नुजूम में हिरक़्ल की तरह माहिर था। फिर वहाँ से हिरक़्ल हिम्स चला गया। अभी हिम्स से निकला नहीं था कि उसके दोस्त का ख़त (उसके जवाब में) आ गया। उसकी राय भी हुज़ूर (ﷺ) के ज़ुहूर के बारे में हिरक़्ल के मुवाफ़िक़ थी कि मुहम्मद (ﷺ) (वाक़ई) पैग़म्बर हैं। इसके बाद हिरक़्ल ने रूम के बड़े आदमियों को अपने हिम्स के महल में बुलाया और उसके हुक्म से महल के दरवाज़े बंद कर लिए गए। फिर वो (अपने ख़ास महल से) बाहर आया। और कहा, 'ऐ रूमवालो! क्या हिदायत और कामयाबी में कुछ हिस्सा तुम्हारे लिए भी है? अगर तुम अपनी सल्तनत की बक़ा चाहते हो तो फिर उस नबी (ﷺ) की बैअत कर लो और मुसलमान हो जाओ। (ये सुनना था कि) फिर वो लोग वहशी गधों की तरह दरवाज़ों की तरफ़ दौड़े (मगर) उन्हें बंद पाया। आख़िर जब हिरक़्ल ने (इस बात से) उनकी ये नफ़रत देखी और उनके ईमान लाने से मायूस हो गया। तो कहने लगा कि उन लोगों को मेरे पास लाओ। (जब वो दोबारा आए) तो उसने कहा कि मैंने जो

هِرَقْلُ حَزَّاءً يَنْظُرُ فِي النُّجُومِ، فَقَالَ لَهُمْ حِينَ سَأَلُوهُ: إِنِّي رَأَيْتُ اللَّيْلَةَ حِينَ نَظَرْتُ فِي النُّجُومِ مَلِكَ الْخِتَانِ قَدْ ظَهَرَ، فَمَنْ يَخْتَتِنُ مِنْ هَذَا الأُمَّةِ ؟ قَالُوا : لَيْسَ يَخْتَتِنُ إِلاَّ الْيَهُودُ، فَلاَ يُهِمَّنَّكَ شَأْنُهُمْ، وَاكْتُبْ إِلَى مَدَائِنِ مُلْكِكَ فَلْيَقْتُلُوا مَنْ فِيهِمْ مِنَ الْيَهُودِ. فَبَيْنَمَا هُمْ عَلَى أَمْرِهِمْ أُتِيَ هِرَقْلُ بِرَجُلٍ أَرْسَلَ بِهِ مَلِكُ غَسَّانَ يُخْبِرُ عَنْ خَبَرِ رَسُولِ اللهِ ﷺ. فَلَمَّا اسْتَخْبَرَهُ هِرَقْلُ قَالَ: اذْهَبُوا فَانْظُرُوا أَمُخْتَتِنٌ هُوَ أَمْ لاَ ؟ فَنَظَرُوا إِلَيْهِ، فَحَدَّثُوهُ أَنَّهُ مُخْتَتِنٌ، وَسَأَلَهُ عَنِ الْعَرَبِ فَقَالَ : هُمْ يَخْتَتِنُونَ. فَقَالَ هِرَقْلُ: هَذَا مَلِكُ هَذِهِ الأُمَّةِ قَدْ ظَهَرَ. ثُمَّ كَتَبَ هِرَقْلُ إِلَى صَاحِبٍ لَهُ بِرُومِيَةَ، وَكَانَ نَظِيرَهُ فِي الْعِلْمِ. وَسَارَ هِرَقْلُ إِلَى حِمْصَ، فَلَمْ يَرِمْ حِمْصَ حَتَّى أَتَاهُ كِتَابٌ مِنْ صَاحِبِهِ يُوَافِقُ رَأْيَ هِرَقْلَ عَلَى خُرُوجِ النَّبِيِّ ﷺ وَأَنَّهُ نَبِيٌّ فَأَذِنَ هِرَقْلُ لِعُظَمَاءِ الرُّومِ فِي دَسْكَرَةٍ لَهُ بِحِمْصَ، ثُمَّ أَمَرَ بِأَبْوَابِهَا فَغُلِّقَتْ، ثُمَّ اطَّلَعَ فَقَالَ: يَا مَعْشَرَ الرُّومِ، هَلْ لَكُمْ فِي الْفَلاَحِ وَالرُّشْدِ وَأَنْ يَثْبُتَ مُلْكُكُمْ فَتُبَايِعُوا هَذَا النَّبِيَّ ؟ فَحَاصُوا حَيْصَةَ حُمُرِ الْوَحْشِ إِلَى الأَبْوَابِ فَوَجَدُوهَا قَدْ غُلِّقَتْ، فَلَمَّا رَأَى هِرَقْلُ نَفْرَتَهُمْ وَأَيِسَ مِنَ الإِيمَانِ قَالَ: رُدُّوهُمْ عَلَيَّ. وَقَالَ: إِنِّي قُلْتُ مَقَالَتِي آنِفًا أَخْتَبِرُ بِهَا شِدَّتَكُمْ

عَلَى دِينِكُمْ، فَقَدْ رَأَيْتُ. فَسَجَدُوا لَهُ وَرَضُوا عَنْهُ، فَكَانَ ذَلِكَ آخِرَ شَأْنِ هِرَقْلَ قَالَ أَبُو عَبْدِ اللهِ. رَوَاهُ صَالِحُ بْنُ كَيْسَانَ وَيُونُسُ وَمَعْمَرٌ عَنِ الزُّهْرِيِّ.

[أطرافه في : ٥١، ٢٦٨١، ٢٨٠٤، ٢٩٤١، ٢٩٧٨، ٣١٧٤، ٤٥٥٣، ٤٩٨٠، ٦٢٦٠، ٧١٩٦، ٧٥٤١].

बात कही थी उससे तुम्हारे दीनी पुख़्तगी की आज़माइश मक़्सूद थी। सो वो मैंने देख ली। तब (ये बात सुनकर) वो सबके सब उसके सामने सज्दे में गिर पड़े और उससे ख़ुश हो गए। बिल आख़िर हिरक़्ल की आख़िरी हालत यही रही। अबू अ़ब्दुल्लाह कहते हैं कि इस ह़दीष़ को स़ालेह़ बिन कैसान, यूनुस और मुअ़मर ने भी ज़ुहरी से रिवायत किया है। (दीगर मक़ामात : 51, 2681, 2804, 2941, 2978, 3174, 4553, 4980, 6260, 7196, 7541)

तश्रीह : वह्य, नुज़ूले वह्य, अक़्सामे वह्य (वह्य की क़िस्में), ज़मान-ए-वह्य, मुक़ामे वह्य इन तमाम की तफ़्सीलात के साथ-साथ ज़रूरत थी कि जिस मुक़द्दस शख़्सियत पर वह्य का नुज़ूल हो रहा है उनकी ज़ाते गिरामी का **तआ़रुफ़** (परिचय) कराते हुए उनके हालात पर भी कुछ रोशनी डाली जाए। मशहूर **मक़ूला** (कहावत) है, **'अल ह़क़्क़ु मा शहिदत बिहिल अअ़दाउ'** हक़ वो है जिसकी दुश्मन भी गवाही दें। इसी उसूल के पेशेनज़र ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) क़ुद्दस सिर्रुहु उल अ़ज़ीज़ ने यहाँ तफ़्सीली ह़दीष़ को नक़ल फ़र्माया जो दो अहमतरीन शख़्सियतों यानी रूम के बादशाह हिरक़्ल और कुफ़्फ़ारे मक्का के सरदार अबू सुफ़यान के बीच **मुकालमा** (वार्तालाप) है। जिसका मौज़ूअ़ (विषय) आँह़ज़रत (ﷺ) की ज़ाते गिरामी और आपकी नुबुव्वत व रिसालत है। ग़ौर करने की बात यह है कि मुकालमा करने वाली दोनों शख़्सियतें उस वक़्त ग़ैर मुस्लिम थीं। बाहमी तौर पर दोनों के **क़ौम व वतन** (जाति और देश), **तहज़ीब व तमद्दुन** (सभ्यता और संस्कृति) में हर तरह से दो अलग-अलग दिशाओं जैसी हैं। अमानत व दयानत और अख़्लाक़ के लिहाज़ से दोनों अपनी-अपनी जगह ज़िम्मेदार हस्तियाँ हैं। ज़ाहिर है कि उनका मुकालमा बहुत ही जंचा-तुला होगा और उनकी राय बहुत ही आला व अर्फ़अ़ होगी। चुनाञ्चे इस ह़दीष़ में पूरे तौर पर ये चीज़ मौजूद है। इसीलिये अ़ल्लामा सिंधी (रह.) फ़र्माते हैं, **'लम्मा कानल मक़्सूद बिज़्ज़ात मिन ज़िक्रिल वह्य हुव तहक़ीक़ुन्नुबुव्वह व इष़बातुहा व कान ह़दीष़ु हिरक़्ल औफ़र तादियतुन लि ज़ालिकल मक़्सूद अदरजहू फ़ी बाबिल वह्यि वल्लाहु अअ़लम'** इस इबारत का मफ़्हूम (भावार्थ) वही है जिसका ज़िक्र ऊपर किया गया।

ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस ह़दीष़ को इस मक़ाम के अ़लावा किताबुल जिहाद व किताबुत् तफ़्सीर व किताबुल शहादात व किताबुल जिज़्या व अदब व ईमान व इल्म व अहकाम व मग़ाज़ी वग़ैरह-वग़ैरह में भी नक़ल फ़र्माया है। कुछ तअ़स्सुब रखने वाले और विरोधी लोग कहते हैं कि मुह़द्दिष़ीने किराम रहिमहुल्लाह अज्मईन महज़ रिवायतें नक़ल करने वाले थे, इज्तिहाद और **इस्तिन्बाते मसाइल** (मसाइल का निचोड़/निष्कर्ष निकालने) में उनको महारथ नहीं थी। ये महज़ झूठ और मुह़द्दिष़ीने किराम की खुली हुई तौहीन है जो हर पहलू से **लाइक़े-मज़म्मत** (निन्दनीय) है।

बाज़ ह़ज़रात मुह़द्दिष़ीने किराम ख़ुसूसन इमाम बुख़ारी (रह.) को मस्लके-शाफ़िई का मुक़ल्लिद बतलाया करते हैं। मगर इस बारे में मज़ीद तफ़्सीलात (विस्तृत विवरणों) से अलग हटकर हम साहिबे-ईज़ाहुल बुख़ारी का एक बयान यहाँ नक़ल कर देते हैं जिससे मा'लूम हो जाएगा कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) मुक़ल्लिद हर्गिज़ न थे बल्कि आप को मुज्तहिदे मुतलक़ का दर्जा हासिल था।

'लेकिन हक़ीक़त ये है कि किसी शाफ़िई या हंबली से **तलम्मुज़** (शागिर्दी) और **तहसीले इल्म** (इल्म हासिल करने) की बिना पर किसी को शाफ़िई या हंबली कहना मुनासिब नहीं बल्कि इमाम के तर्जुमाशुदा बुख़ारी के **अ़मीक़ मुतालअ़** (गहन अध्ययन) से मा'लूम होता है कि इमाम एक मुज्तहिद हैं, उन्होंने जिस तरह अहनाफ़ (रह.) से इख़्तलाफ़ किया है ह़ज़राते शाफ़िई की तादाद भी कुछ कम नहीं है। इमाम बुख़ारी (रह.) के इज्तिहाद और **तराजिमे-अबवाब** (अनुवादित अध्याय) में उनकी बालिग़ नज़री के पेशेनज़र उनको किसी फ़िक़्ह का पाबन्द नहीं कहा जा सकता है। (ईज़ाहुल बुख़ारी हिस्सा अव्वल पेज नं. 30)

सहीह बुख़ारी शरीफ़ के **अ़मीक़ मुतालअ़े** (गहन/सूक्ष्म अध्ययन) से मा'लूम होगा कि ह़ज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) ने इस्तिंबाते मसाइल व फ़िक़्हुल ह़दीष़ के बारे में बहुत ही ग़ौर व ख़ोज़ से काम लिया है और एक-एक ह़दीष़ से बहुत से मसाइल

ष़ाबित किये हैं। जैसा कि अपने-अपने मक़ामात पर नाज़िरीन (पाठक गण) मुतालआ करेंगे।

अल्लामा हाफ़िज़ इब्ने हजर (रह.) मुक़द्दमे की दूसरी फस्ल में फ़र्माते हैं,

'तक़र्रर अन्नहू इल्तज़म फ़ीहिस्सिह्हत व अन्नहू ला यूरेदु फ़ीहि इल्ला हदीष़िन सहीहन (इला क़ौलिही) षुम्म राअ अल्ला युख़्लीहि मिनल फ़वाएदिल फ़िक़हिय्यह वन्निकति हिकमिय्यति फ़सतख़रज बि फ़हमिही मिनल मुतूनि मआनी कष़ीरह फ़र्रक़हा फ़ी अबवाबिल किताब बि हस्बे तुनासिबुहा (इला क़ौलिहा) क़ालश्शैख़ मुहिय्युद्दीन नफ़अल्लाहु बिही लैस मक़्सूदुल बुख़ारी अल इक़्तिसार अल्ल अहादीष़ि फ़क़त बल मुरादोहू अल इस्तिम्बातु मिन्हा वल इस्तिदलालु लि अबवाबि अरादिहा (इला क़ौलिही) व क़द इद्दआ बअ़्ज़ुहुम अन्नहू सनअ ज़ालिक अमादन' (हुदा उस्सारी पेज नं. 8 बैरूत)

ये बात ष़ाबित है कि इमाम ने इल्तिज़ाम किया है कि इसमें सिवाय सहीह अहादीष़ के और किसी क़िस्म की रिवायात नहीं ज़िक्र करेंगे और इस ख़याल से है कि इसको फ़वाइदे-फ़िक़्ही और हिक्मत के नुकात से ख़ाली न रहना चाहिये, अपनी फ़हम से मतने हदीष़ से बहुत बहुत मा'नी **इस्तिख़राज** (आविष्कार करना/निकालना) किये गये हैं। जिनको मुनासबत के साथ अलग-अलग अबवाब (अध्यायों) में बयान कर दिया। शैख़ मुहियुद्दीन ने कहा कि इमाम का मक़्सूद हदीष़ ही का ज़िक्र करना नहीं है बल्कि इससे **इस्तिदलाल** (दलील लेकर) व इस्तिंबात करके बाब मुक़र्रर करना है (इन्हीं वुजूहात से) बाज़ ने दावा किया है कि इमाम ने ये सब-कुछ ख़ुद और **क़सदन** (जान-बूझकर) किया है। (हल्ले मुश्किलाते बुख़ारी रह. हज़रत मौलाना सैफ़ बनारसी क़द्दस सिर्रुहु पेज नं. 16)

सन् 7 हिजरी माहे मुहर्रम की पहली तारीख़ थी कि नबी करीम (ﷺ) ने शाहाने-आलम (विभिन्न देशों के बादशाहों) के नाम दा'वते-इस्लामी के ख़ुतूते मुबारक (चिट्ठियाँ) अपने मुअ़ज़्ज़ज़ सुफ़रा (सम्माननीय संदेशवाहकों) के हाथों रवाना किये। जो सफ़ीर जिस क़ौम के पास भेजा गया वो वहाँ की ज़बान (भाषा) जानता था कि तब्लीग़ के फ़राइज़ को हुस्ने ख़ूबी के साथ अंजाम दे सके। ऐसी ही ज़रूरियात के लिये आप (ﷺ) के वास्ते चाँदी की मुहर तैयार की गई थी। तीन लाइनों में इस पर मुहम्मद रसूलुल्लाह नक्श किया गया था। हिरक़्ल, क़ुस्तुनतुनिया (वर्तमान इस्ताम्बूल/तुर्की की राजधानी) का शाह या रूम की पूर्वी शाख़े-सल्तनत का नामवर शहंशाह था, वो मज़हबी तौर पर ईसाई था। हज़रत दहिया कल्बी (रज़ि.) उसके पास नाम-ए-मुबारक लेकर गये। ये बादशाह से बैतुल मक़दिस के मुक़ाम पर मिले, जिसे यहाँ लफ़्ज़े ईलया से याद किया गया है, जिसके मा'ने बैतुल्लाह के हैं। हिरक़्ल ने सफ़ीर के ऐजाज़ (सम्मान) में बड़ा ही शानदार दरबार मुन्अक़िद किया (सजाया) और सफ़ीर से आँहज़रत (ﷺ) के बारे में बहुत सी बातें दर्याफ़्त करता रहा। इसके बाद हिरक़्ल ने मज़ीद तहक़ीक़ (विस्तृत खोजबीन) के लिये हुक्म दिया कि अगर मुल्क में कोई आदमी मक्का से आया हुआ हो तो उसे पेश किया जाए। इत्तेफ़ाक़ से उन दिनों अबू सुफ़यान, मक्का के दीगर ताजिरों (व्यापारियों) के साथ मुल्के शाम (सीरिया) आए हुए थे, उनको बैतुल मक़दिस बुलाकर दरबार में पेश किया गया। उन दिनों अबू सुफ़यान नबी करीम (ﷺ) का जानी दुश्मन था। मगर क़ैसर के दरबार में उसकी ज़बान हक़ व सदाक़त (सच्चाई) के सिवा कुछ और न बोल सकी। हिरक़्ल ने आँहज़रत (ﷺ) के मुतअ़ल्लिक़ अबू सुफ़यान से दस सवाल किये जो अपने अन्दर बहुत गहरे हक़ाइक़ रखते थे। उनके जवाब में अबू सुफ़यान ने भी जिन हक़ाइक़ का इज़्हार किया उनसे आप (ﷺ) की सदाक़त हिरक़्ल के दिल में नक़्श हो गई, मगर वह अपनी क़ौम और हुकूमत के ख़ौफ़ से ईमान न ला सका। आख़िरकार कुफ़्र की हालत ही में उसका ख़ात्मा हुआ। मगर उसने जो पेशगोई (भविष्यवाणी) की थी कि एक दिन आएगा कि अरब के मुसलमान हमारे मुल्क के तख़्त पर क़ाबिज़ हो जाएंगे वो हर्फ़ ब हर्फ़ सही ष़ाबित हुई और वो दिन आया कि मसीहियत (ईसाइयत) का सदर मुक़ाम और क़िब्ला व मर्कज़ ईसाई क़ौम के हाथ से निकलकर नई क़ौम के हाथों में चला गया।

मशहूर इतिहासकार गैबन के लफ़्ज़ों में तमाम मसीही दुनिया पर सकते की हालत तारी हो गई क्योंकि मसीहियत की एक सबसे बड़ी तौहीन को न तो मज़हब का कोई मौजज़ा (चमत्कार) रोक सका, जिसकी उन्हें उम्मीद थी, न ही ईसाई शहंशाह का भारी-भरकम लश्कर। फिर ये सिर्फ़ बैतुल मक़दिस ही की फ़तह न थी बल्कि तमाम एशिया व अफ़्रीक़ा में मसीही फ़र्मारवाई का ख़ात्मा था। हिरक़्ल के ये अल्फ़ाज़ जो उसने तख़्त-ए-जहाज़ पर लेबनान की चोटियों को मुख़ातब (सम्बोधित) करके कहे थे, वे आज तक मुवर्रिख़ीन (इतिहासकारों) की ज़बान पर हैं, अलविदा सरज़मीने शाम! हमेशा के लिये अलविदा!'

फ़िदा-ए-रसूल हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान साहब (रह.) पटयालवी : मुनासिब होगा कि इस मुकालमे को मुख़्तसरन फ़िदा-ए-रसूल हज़रत क़ाज़ी मुहम्मद सुलैमान साहब मन्सूरपुरी (रह.) के लफ़्ज़ों में भी नक़ल कर दिया जाए, जिससे नाज़िरीन (पाठक) इस मुकालमे को पूरे तौर पर समझ सकेंगे।

क़ैसर : मुहम्मद का ख़ानदान व नसब क्या है?

अबू सुफ़यान : शरीफ़ व अज़ीम

क़ैसर : सच है नबी शरीफ़ घराने के होते हैं ताकि उनकी इताअत में किसी को आर (शर्म) न हो।

क़ैसर : मुहम्मद से पहले भी किसी ने अरब में या कुरैश में नबी होने का दा'वा किया है?

अबू सुफ़यान : नहीं!

ये जवाब सुनकर हिरक़्ल ने कहा कि अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि अपने से पहले की तक़्लीद और रेस करता है।

क़ैसर : नबी होने से पहले क्या ये शख़्स झूठ बोला करता था या उसे झूठ बोलने की कभी तोहमत दी गई थी?

अबू सुफ़यान : नहीं!

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा, ये नहीं हो सकता कि जिस शख़्स ने लोगों पर झूठ न बोला हो वो ख़ुदा पर झूठ बाँधे।

क़ैसर : उसके बाप-दादा में कोई बादशाह भी हुआ है?

अबू सुफ़यान : नहीं!

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा, अगर ऐसा होता तो मैं समझ लेता कि वो नुबुव्वत के बहाने से बाप-दादा की सल्तनत हासिल करना चाहता है।

क़ैसर : मुहम्मद के मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ज़्यादा हैं या सरदार और क़वी (मज़बूत) लोग?

अबू सुफ़यान : मिस्कीन व हक़ीर लोग।

हिरक़्ल ने इस जवाब पर कहा कि हर नबी के पहले मानने वाले मिस्कीन ग़रीब लोग ही होते रहे हैं।

क़ैसर : उन लोगों की तादाद रोज़-ब-रोज़ बढ़ रही है या कम हो रही है?

अबू सुफ़यान : बढ़ रही है।

हिरक़्ल ने कहा, ईमान की यही ख़ासियत होती है कि आहिस्ता-आहिस्ता बढ़ता है और हद्द-कमाल तक पहुँच जाता है।

क़ैसर : कोई शख़्स उसके दीन से बेज़ार होकर फिर भी जाता है?

अबू सुफ़यान : नहीं!

हिरक़्ल ने कहा, लज़्ज़ते-ईमानी की यही तासीर होती है कि जब दिल में बैठ जाती है और रूह पर अपना असर क़ायम कर लेती है तब जुदा नहीं होती।

क़ैसर : ये शख़्स कभी अहदो-पैमां (वा'दों) को तोड़ भी देता है?

अबू सुफ़यान : नहीं! लेकिन इस साल हमारा मुआहदा उससे हुआ है देखें क्या अंजाम हो? अबू सुफ़यान कहते हैं कि मैंने जवाब में सिर्फ़ इतना फ़िक़रा ज़्यादा कर सका था। मगर क़ैसर ने उस पर कुछ तवज्जुह नहीं दी और यूँ कहा कि बेशक नबी अहद-शिकन (वा'दा तोड़ने वाले) नहीं होते, अहदशिकनी दुनियादार लोग किया करते हैं। नबी दुनिया के तलबगार नहीं होते।

क़ैसर : कभी उस शख़्स के साथ तुम्हारी लड़ाई भी हुई है?

अबू सुफ़यान : हाँ।

क़ैसर : जंग का नतीजा क्या रहा?

अबू सुफ़यान : कभी वो ग़ालिब रहा (बद्र में) और कभी हम (उहुद में)।

हिरक़्ल ने कहा अल्लाह के नबियों का यही हाल होता है लेकिन आख़िरकार अल्लाह की मदद और फ़तह उन्हीं को मिलती है।

क़ैसर : उसकी ता'लीम क्या है?

अबू सुफ़यान : एक अल्लाह की इबादत करो, बाप दादा के तरीक़ (यानी बुत-परस्ती को) छोड़ दो। नमाज़, रोज़ा, सच्चाई, पाक दामनी, और सिलह रहमी की पाबन्दी इख़्तियार करो।

हिरक़्ल ने कहा सच्चे नबी की यही अलामतें (निशानियाँ) बताई गई हैं। मैं समझता था कि नबी का ज़ुहूर होनेवाला है लेकिन ये नहीं समझता था कि वो अरब में से होगा। अबू सुफ़यान! अगर तुमने सच सच जवाब दिये हैं तो वो एक दिन इस जगह (यानी शाम और बैतुल मक़दिस) जहाँ मैं बैठा हुआ हूँ, का ज़रूर मालिक हो जाएगा। काश! मैं उनकी ख़िदमत में हाज़िर हो सकता और नबी के पांव धोया करता।

इसके बाद आँहज़रत (ﷺ) का नाम-ए-मुबारक पढ़ा गया। अराकीने दरबार उसे सुनकर चीखे-चिल्लाये और हमको दरबार से निकाल दिया गया। उसी दिन से अपनी ज़िल्लत का नक़्श और आँहज़रत (ﷺ) की अज़मत का यक़ीन हो गया। (रहमतुल लिल आलमीन, जिल्द अव्वल पेज नं. : 152,154)

अबू सुफ़यान ने आप (ﷺ) के लिए अबू कब्शा का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया था क्योंकि कुफ़्फ़ारे मक्का आँहज़रत (ﷺ) को तंज और तहक़ीर के तौर पर इब्ने अबू कब्शा के लक़ब से पुकारा करते थे। अबू कब्शा एक शख़्स का नाम था जो बुतों की बजाए एक सितारा शुअ़रा की पूजा किया करता था।

कुछ लोग कहते हैं कि अबू कब्शा आँहज़रत (ﷺ) के रज़ाई (दूध शरीक) बाप थे।

हिरक़्ल को जब ये अंदाज़ा हो गया कि ये लोग किसी तरह भी इस्लाम क़ुबूल नहीं करेंगे तो उसने भी अपना पैंतरा बदल दिया और कहा कि इस बात से महज़ तुम्हारा इम्तिहान लेना मक़्सूद था। तो सबके सब उसके सामने सज्दे में गिर गए, जो गोया तअ़जीम और इताअ़त (सम्मान और फ़र्मांबरदारी) के था।

हिरक़्ल के बारे में कुछ लोग इस्लाम के भी क़ाइल हैं। मगर सहीह बात यही है कि रग़बत (लगाव) होने के बावजूद वो इस्लाम क़ुबूल न कर सका।

अ़ल्लामा क़स्तलानी (रह.) ने लिखा है कि उनके अ़हद यानी 11वीं सदी हिज्री तक आँहज़रत (ﷺ) का नामा मुबारक हिरक़्ल की औलाद में महफ़ूज़ था और उसको तबर्रुक समझकर बड़े एहतिमाम से सोने के संदूक़चे में रखा गया था। उनका ऐतिक़ाद था कि '**वअवसाना आबाअना मादाम हाज़ल किताब इन्दना ला यज़ालुल मलिकु फ़ीना फ़नहनु नहफ़िज़हू ग़ायतल हिफ़्ज़ि व नुअज़्ज़िमुहू वनकतुमुहू अनिन्नसारा लियदूमल मलिकु फ़ीना इन्तिहा।**' (फ़त्हुल बारी)

अबू सुफ़यान आख़िरी वक़्त में जबकि मक्का फ़तह हो चुका था। इस्लाम क़ुबूल करके फ़िदाइयाने इस्लाम में दाख़िल हो गये थे। उस वक़्त के चंद अशआ़र मुलाहज़ा हों।

ल अ़ मरुका इन्नी यौम अहमिलू रायतन / लि तग़लिब ख़ैलुल्लाति ख़ैला मुहम्मद
फ़कामा लि मुदलिजल हैरान अज़लम लैलतन / फ़हाज़ा अवानी हीन अहदी फ़हतदी
हदानी हादिन ग़ैर नफ़्सी व दल्लनी इल्लल्लाहि मन तरदतहु कुल्लु मुतरदिन

क़सम है कि जिन दिनों में निशाने जंग इसलिये उठाया करता था कि लात (बुत) का लश्कर मुहम्मद (ﷺ) के लश्कर पर ग़ालिब आ जाए उन दिनों में ख़ार पुश्त जैसा था जो अँधेरी रात में टक्करें खाता हो। अब वो वक़्त आ गया कि मैं हिदायत पाऊँ और सीधी राह अपना लूँ, मुझे हादी ने, न कि मेरे नफ़्स ने हिदायत दी है और अल्लाह का रास्ता उस शख़्स ने बतलाया है

जिसे मैं ने पूरे तौर पर धुत्कार दिया और छोड़ दिया था।

मुतफ़र्रिक़ात : अबू सुफ़यान (रज़ि.) ने जिस मुद्दते सुलह का ज़िक्र किया था। उससे सुलह हुदैबिया के दस साला मुद्दत ज़िक्र है।

हिरक़्ल ने कहा था वो आख़िरी नबी अरब में से होगा। ये इसलिये कि यहूद और नसारा यही गुमान किये हुए थे कि आख़िरी नबी भी बनी इस्राईल में से होगा। उन्होंने हज़रत मूसा (अलैहिस्सलाम) के इस क़ौल को भुला दिया था कि तुम्हारे भाईयों में से अल्लाह एक पैग़म्बर मेरी तरह पैदा करेगा।

और नबी के क़रीबियों की इस **बशारत** (ख़ुशख़बरी/शुभ सूचना) को भी फ़रामोश कर दिया (भुला दिया) था कि फ़ारान यानी मक्का के पहाड़ों से अल्लाह ज़ाहिर हुआ। नीज़ हज़रत मसीह (अलैहिस्सलाम) की इस बात को भी वो भूल गए थे कि जिस पत्थर को मुअम्मारों ने कोने में डाल दिया था, वही महल का सद्र नशीन हुआ।

नीज़ हज़रत सुलैमान (अलैहिस्सलाम) के इस मुक़द्दस गीत को भी वो फ़रामोश कर चुके थे कि वो तो ठीक मुहम्मद (ﷺ) हैं, मेरा ख़लील, मेरा हबीब भी यही है। वो दस हजार क़ुदूसियों के बीच झण्डे की तरह खड़ा होता है ऐ यरोशलम के बेटों!

ये जुम्ला बशारतें यक़ीनन हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) के हक़ में थीं, मगर यहूद और नसारा उनको इनादन (कीना, दुश्मनी, वैरभाव की वजह से) भूल चुके थे। इसीलिए हिरक़्ल ने ऐसा कहा।

आँहज़रत (ﷺ) ने अपने नाम—ए—मुबारक में आयते करीमा **'वला यत्तख़िज़ु बअ्ज़ुना बअ्ज़न अरबाबम मिन दूनिल्लाहि'** (आले इमरान : 64)) का इस्ते'माल इसलिये किया कि यहूद और नसारा में और बहुत से अमराज़ के साथ तक़्लीदे जामिद (अंधी पैरवी) का भी मर्ज़ बुरी तरह दाख़िल हो गया था। वो अपने मौलवियों और दुरवेशों की तक़्लीद में इतने अँधे हो चुके थे कि उन्हीं का फ़त्वा उनके लिए आसमानी वह्य का दर्जा रखता था।

हमारे ज़माने में मुक़ल्लिदीने जामिदीन का भी यही हाल है कि उनको कितनी ही क़ुर्आनी आयात या अहादीष़ नबवी दिखलाओ क़ौले इमाम के मुक़ाबले में उन सबको रद्द कर देंगे। इसी तक़्लीदे जामिद ने उम्मत का बेड़ा ग़र्क़ कर दिया। **इन्ना लिल्लाहि षुम्मा इन्ना लिल्लाह** हनफ़ी, शाफ़िई नामों पर जंगो जिदाल इस तक़्लीदे जामिद ही का नतीजा है।

अल्लामा क़स्तलानी (रह.) ने लिखा है कि हिरक़्ल और उसके दोस्त ज़ग़ातिर ने इस्लाम क़ुबूल करना चाहा था। मगर हिरक़्ल अपनी क़ौम से डर गया था और ज़ग़ातिर ने इस्लाम क़ुबूल कर लिया था और रूम वालों को इस्लाम की दा'वत दी मगर रूमियों ने उनको शहीद कर दिया।

अबू सुफ़यान (रजि) ने रोमियों के लिए बनू असफ़र (ज़र्द नस्ल) का लफ़्ज़ इस्ते'माल किया था। कहते हैं कि रोम के जद्दे आला (पूर्वज), जो रूम बिन ऐस बिन इस्हाक़ (अलैहिस्सलाम) थे, ने एक हब्शी शहजादी से शादी की थी। जिससे ज़र्द यानी गेहुंआ रंगी नस्ल की औलाद पैदा हुई। इसीलिए उनको बनू अल असफ़र कहा गया। इस हदीष़ से और भी बहुत से मसाइल पर रोशनी पड़ती है।

आदाबे मुरासलत व तरीक़े दा'वते इस्लाम के लिए नाम-ए-मुबारक में हमारे लिए बहुत से अस्बाक़ हैं। ये भी मा'लूम हुआ कि **इस्लामी तब्लीग़ के लिए तहरीरी (लिखित/प्रिण्टेड) कोशिश करना भी नबी (ﷺ) की सुन्नत है।**

दा'वते हक़ को मुनासिब तौर पर अकाबिरे अस्र के सामने रखना भी मुसलमानों का एक अहम फ़रीज़ा है। ये भी ज़ाहिर हुआ कि अलग ख़याल क़ौमें अगर मुश्तरक़ा (एक समान) मसलों में इत्तिहाद व अमल से काम लें तो ये भी इस्लाम की मंशा के मुताबिक़ है।

इर्शादे नबवी **'फ़इन्न अलैक इष्मुल यरीसीन'** से मा'लूम हुआ कि बड़ों की ज़िम्मेदारियाँ भी बड़ी होती हैं। यरीसीन काश्तकारों (किसानों) को कहते हैं। हिरक़्ल की रिआया काश्तकारों ही पर मुश्तमिल थी। इसलिये आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि अगर आपने दा'वते इस्लाम क़ुबूल न की और आपकी मुताबअत में आपकी रिआया भी इस नेअमते उज़्मा से महरूम रह गई तो सारी रिआया का गुनाह आपके सर होगा।

उन तफ़्सीली मा'लूमात के बाद हिरक़्ल ने आँहज़रत (ﷺ) का नाम-ए-मुबारक मंगवाया जो अज़ीमे बसरा की मअरिफ़त हिरक़्ल के पास पहुँचा था। जिसका मज़मून इस तरह शुरू होता था,

'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम मिन मुहम्मद रसूलिल्लाहि इला हिरक़्ल अज़ीमिर्रूम' इसे सुनकर हिरक़्ल का भतीजा बहुत नाराज़ हुआ और चाहा कि नाम–ए–मुबारक को चाक कर दिया जाए क्योंकि उसमें शहंशाहे–रूम के नाम पर मुहम्मद रसूलुल्लाह (ﷺ) के नाम को फ़ौक़ियत (श्रेष्ठता) दी गई है और शहंशाह को भी सिर्फ़ अज़ीमुर्रूम लिखा गया है; हालाँकि आप मालिके रोम, सुल्ताने रोम हैं। हिरक़्ल ने अपने भतीजे को डाँटते हुए कहा, जो ख़त में लिखा है वो सही है मैं मालिक नहीं हूँ, मालिक तो अल्लाह करीम है। रहा अपने नाम का तक़द्दुम सो अगर वो वाक़िअतन नबी हैं तो उनके नाम को तक़्दीम हासिल है। इसके बाद नाम–ए–मुबारक पढ़ा गया।

इब्ने नातूर शाम में इसाई लाट पादरी और वहाँ का गवर्नर भी था। हिरक़्ल जब हिम्स से ईलया आया तो इब्ने नातूर ने एक सुबह को उसकी हालत **मुतग़य्यिर व मुतफ़क्किर** (बदली हुई और अलग) देखी। सवाल करने पर हिरक़्ल ने बताया कि मैंने आज रात तारों पर नज़र की तो मा'लूम हुआ कि मेरे मुल्क पर **मलिकुल ख़ित्तान** (ख़त्ना करने वालों के बादशाह) का **ग़लबा** (प्रभुत्व) हो चुका है। हिरक़्ल फ़ितरी तौर पर **काहिन** (ज्योतिषी) था और **इल्मे नुजूम** (ज्योतिष विद्या) में महारत रखता था। मुंजिमीन का अक़ीदा था कि बुर्जे अक़रब में क़िरानु अस्सादैन के वक़्त आख़री नबी का ज़ुहूर होगा। बुर्जे अक़रब वो है जब उसमें चाँद और सूरज दोनों मिल जाते हैं तो ये वक़्त मुंजिमीन के पास क़िरानुस्सादैन कहलाता है और मुबारक समझा जाता है। ये क़िरान हर बीस साल के बाद होता है। चुनाँचे आँहज़रत (ﷺ) की औलाद बसआदत भी क़िराने अस्सअदैन में हुई और आप (ﷺ) के सरे मुबारक पर नुबुव्वत का ताज भी जिस वक़्त रखा गया वो क़िरानुस्सादैन का वक़्त था। फ़तहे मक्का के वक़्त अस्सअदैन बुर्जे अक़रब में जमा थे। ऐसे मौक़े पर हिरक़्ल का जवाब उसके पास बड़ी अहमियत रखता था चुनाँचे उसने मुसाहिबीन से मा'लूम किया कि ख़त्ने का रिवाज किस मुल्क और किस क़ौम में है? चुनाँचे यहूदियों का नाम लिया गया और साथ ही उनके क़त्ल का भी मश्वरा दिया गया कि हाकिमे ग़स्सान हारिष बिन अबी तामिर ने एक आदमी (ये शख़्स ख़ुद अरब का रहनेवाला था जो ग़स्सान के बादशाह के पास आँहज़रत (ﷺ) की ख़बर देने गया, उसने उसको हिरक़्ल के पास भिजवा दिया, ये मख़्तून था) की मअरिफ़त हिरक़्ल को ख़बर दी कि अरब में एक नबी पैदा हुए हैं। जब ये मुअज़्ज़ज़ क़ासिद हिरक़्ल के पास पहुँचा तो हिरक़्ल ने अपने ख़्वाब की बिना पर मा'लूम किया कि आने वाला क़ासिद फ़िल वाक़ेअ मख़्तून (ख़त्ना शुदा) है। हिरक़्ल ने उसी को ख़ुद के ख़्वाब की ता'बीर क़रार देते हुए कहा कि ये रिसालत का दावेदार मेरी राजधानी तक जल्दी ही सल्तनत हासिल कर लेगा।

उसके बाद हिरक़्ल ने बतौरे मश्विरा ज़ग़ातिर को इटली में ख़त लिखा और साथ में मक्तूबे नबवी भी भेजा। ये हिरक़्ल का हम-सबक़ (सहपाठी) था। ज़ग़ातिर के नामा मक्तूब हज़रत दहया क़लबी (रज़ि.) ही लेकर गए थे और उनको हिदायत की गई थी कि ये ख़त ज़ग़ातिर को अकेले में दिया जाए। चुनाँचे ऐसा ही किया गया। उसने नाम–ए–मुबारक को आँखों से लगाया और बोसा दिया और जवाब में हिरक़्ल को लिखा कि मैं ईमान ला चुका हूँ। फ़िलवाक़ेअ हज़रत मुहम्मद (ﷺ) नबी व रसूले मौऊद हैं। दरबारी लोगों ने ज़ग़ातिर का इस्लाम मा'लूम होने पर उनको क़त्ल कर दिया। हज़रत दह्या क़लबी (रज़ि.) वापिस हिरक़्ल के दरबार में गए और माजरा बयान किया। जिससे हिरक़्ल भी अपनी क़ौम से डर गया। इसलिये दरवाज़े को बंद करके दरबार मुनअक़िद किया ताकि ज़ग़ातिर की तरह उसको भी क़त्ल न कर दिया जाए। दरबारियों ने नामा ए मुबारक और हिरक़्ल की राय सुनकर मुख़ालफ़त में शोरगुल बर्पा कर दिया। जिस पर हिरक़्ल को अपनी राय बदलनी पड़ी और बिल आख़िर कुफ़्र ही पर दुनिया से रुख़्सत हुआ।

इमाम बुख़ारी (रह.) ने अपनी जामेअ सहीह को हदीष **'इन्नमल आ'मालो बिन्नियात'** और आयते करीमा **'इन्ना औहैना इलैक'** से शुरू फ़र्माया था और इस बाब को हिरक़्ल के क़िस्से और नाम–ए–नबवी पर ख़त्म फ़र्माया और हिरक़्ल की बाबत लिखा कि **फ़काना ज़ालिक आख़िरू शानि हिरक़्ल** यानी हिरक़्ल का आख़री हाल ये हुआ।

इसमें हज़रत इमाम बुख़ारी (रह.) इशारतन फ़र्माते हैं कि हर शख़्स का फ़र्ज़ है कि वो अपनी निय्यत की दुरुस्तगी के साथ अपनी आख़िरी हालत को दुरुस्त रखने की फ़िक्र करे कि आ'माल का ए'तिबार निय्यत और ख़ातिमे पर है। शुरू की आयते शरीफ़ा **'इन्ना औहैना इलैक'** में हज़रत मुहम्मद (ﷺ) और आप से पहले के तमाम अंबिया व रसूल (अलैहिमिस्सलाम) की वह्य का सिलसिल–ए–औलिया एक ही रहा है और सबकी दा'वत का ख़ुलासा सिर्फ़ इक़ामते दीन व आपसी इत्तिफ़ाक़ है। उसी दा'वत को दोहराया गया और बतलाया गया कि अक़ीद-ए-तौहीद पर तमाम धर्मों को जमा होने की दा'वत पेश करना यही इस्लाम का अव्वलीन मक़सद है और बनी नोए इंसान को इंसानी गुलामी की जंजीरों से निकालकर सिर्फ़ एक ख़ालिक़ मालिक फ़ातिरस्समावाति वल अर्ज़ की गुलामी में दाख़िल होने का पैग़ाम

देना तालीमाते मुहम्मदी (ﷺ) का लब्बेलुबाब है। इक़ामते दीन ये कि सिर्फ़ ख़ुदा-ए-वह्दहू ला शरीक की इबादत, बंदगी, इताअत, फ़र्माबरदारी की जाए और तमाम ज़ाहिरी व बातिनी मअ़बूदाने बातिला (झूठे उपास्यों) से मुँह मोड़ लिया जाए। इक़ामते दीन का सहीह मफ़हूम कलिमा तय्यिबा **ला इलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह** में पेश किया गया है।

हिरक़्ल काफ़िर था मगर आँहज़रत (ﷺ) ने अपने नाम-ए-मुबारक में उसको एक मुअ़ज़्ज़ज़ लक़ब अजीमुर्रूम से मुख़ातब फ़र्माया। मा'लूम हुआ कि ग़ैर मुस्लिमों के साथ भी अख़्लाक़े फ़ाज़िला व तहज़ीब के दायरे में ख़िताब करना सुन्नते नबवी (ﷺ) है।

अलहम्दुलिल्लाह! बाब बदउल वह्य के तर्जुमे व तश्रीहात से फ़राग़त हासिल हुई। **वलहम्दुलिल्लाहि अव्वलु व आख़िरु रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्नसीना औ अख़्ताना**, आमीन!

2. किताबुल ईमान

किताब ईमान के बयान में

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बाब 1 :

नबी करीम (ﷺ) के उस फ़र्मान की तशरीह से मुता'ल्लिक़ है जिस में आप (ﷺ) ने फ़र्माया कि इस्लाम की बुनियाद पाँच चीज़ों पर रखी गई है और ईमान का ता'ल्लुक़ क़ौल और फ़ेअ़ल दोनों से है और वो बढ़ता और घटता है। जैसा कि अल्लाह तआ़ला ने फ़र्माया, ताकि उनके पहले ईमान के साथ ईमान में और ज़्यादती हो। (सूरह फ़त्ह : 4) **और फ़र्माया, मैंने उनको हिदायत में और ज़्यादा बढ़ा दिया।** (सूरह कहफ़ : 13) **और फ़र्माया कि जो लोग सीधी राह पर हैं उनको अल्लाह और हिदायत देता है** (सूरह मरयम : 76) **और फ़र्माया कि जो लोग हिदायत पर है अल्लाह ने और ज़्यादा हिदायत दी और उनको परहेज़गारी अ़ता फ़र्माई।** (सूर मुहम्मद : 17) **और फ़र्माया कि जो लोग ईमानदार हैं उनका ईमान और ज़्यादा हुआ** (सूरह मुद्दष्षिर : 31) **और फ़र्माया कि इस सूरह ने तुम में से किसका ईमान और बढ़ा दिया? फ़िल वाक़ेअ़ जो लोग ईमान लाए हैं उनका ईमान और ज़्यादा हो गया।** (सूरह तौबा : 124) **और फ़र्माया कि मुनाफ़िक़ों ने मोमिनों से कहा कि तुम्हारी बर्बादी के लिए लोग बकष़रत जमा हो रहे हैं, उनका ख़ौफ़ करो।**

١- بَابُ قَوْلِ النَّبِيِّ ﷺ:
((بُنِيَ الإِسْلاَمُ عَلَى خَمْسٍ))
وَهُوَ قَوْلٌ وَفِعْلٌ. وَيَزِيدُ وَيَنْقُصُ. قَالَ اللهُ تَعَالَى : ﴿لِيَزْدَادُوا إِيمَانًا مَعَ إِيمَانِهِمْ﴾ ﴿وَزِدْنَاهُمْ هُدًى﴾، ﴿وَيَزِيدُ اللهُ الَّذِينَ اهْتَدَوا هُدًى﴾، ﴿وَالَّذِينَ اهْتَدَوا زَادَهُمْ هُدًى وَآتَاهُمْ تَقْوَاهُمْ﴾ ﴿وَيَزْدَادَ الَّذِينَ آمَنُوا إِيمَانًا﴾ وَقَوْلُهُ : ﴿أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هَذِهِ إِيمَانًا فَأَمَّا الَّذِينَ آمَنُوا فَزَادَتْهُمْ إِيمَانًا﴾ وَقَوْلُهُ جَلَّ ذِكْرُهُ : ﴿فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيمَانًا﴾ وَقَوْلُهُ تَعَالَى: ﴿وَمَا زَادَهُمْ إِلاَّ إِيمَانًا وَتَسْلِيمًا﴾. وَالْحُبُّ فِي اللهِ وَالْبُغْضُ فِي اللهِ مِنَ الإِيمَانِ.
وَكَتَبَ عُمَرُ بْنُ عَبْدِ الْعَزِيزِ إِلَى عَدِيِّ بْنِ